P. R. No.: DL(S)-17/3082/2012-14
Rgn. No.: DELHIN/2000/2473
Date of Post : 27-28

SEVA-DHAM Plus
Since 1994
.....The Wellness Center
(YOGA, AYURVEDA, NATUROPATHY & PHYSIOTHERAPY)
Relax Your Body, Mind & Soul In A Spiritual Environment
Truly rejuvenating treatment packages through
Relaxing Traditional Kerala Ayurvedic Therapies

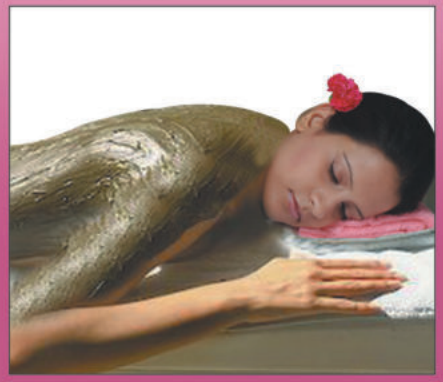

KH-57, Ring Road, (Behind Indian Oil Petrol Pump), Sarai Kale Khan, New Delhi - 110013
Ph. : +91-11-2632 0000, +91-11-2632 7911 Fax : +91-11-26821348 Mob. : +91-9868 99 0088, +91-9999 60 9878
Website : www.sevadham.info E-mail : contact@sevadham.info

प्रकाशक व मुद्रक : श्री अरुण तिवारी, मानव मंदिर मिशन ट्रष्ट (रजि.) के.एच.–57 जैन आश्रम, रिंग रोड़, सराय काले खाँ, इंडियन ऑयल पेट्रोल पम्प के पीछे, पो. बो.–3240, नई दिल्ली–110013, आई. जी. प्रिन्टर्स 104 (DSIDC) ओखला फेस–1 से मुद्रित।
संपादिका : श्रीमती निर्मला पुगलिया

कवर पेज सहित
36 पृष्ठ
मूल्य 5.00 रूपये
फरवरी, 2014

रूपरेखा

जीवन मूल्यों की प्रतिनिधि मासिक पत्रिका

बसंत–ऋतु के सूर्योदय का स्वागत करते हुए पेड़–पौधे तथा पक्षी।

रूपरेखा

जीवन मूल्यों की प्रतिनिधि मासिक पत्रिका

वर्ष : 14 अंक : 2 फरवरी, 2014

: मार्गदर्शन :
पूज्या प्रवर्तिनी साध्वी मंजुलाश्री जी

: संयोजना :
साध्वी वसुमती
साध्वी पद्मश्री

: परामर्शक :
श्रीमती मंजुबाई जैन

: सम्पादक :
श्रीमती निर्मला पुगलिया

: व्यवस्थापक :
श्री अरूण तिवारी

वार्षिक शुल्क : 60 रुपये
आजीवन शुल्क : 1100 रुपये

: प्रकाशक :
मानव मंदिर मिशन ट्रस्ट (रजि.)
पोस्ट बॉक्स नं. : 3240
सराय काले खाँ बस टर्मिनल के सामने, नई दिल्ली - 110013
फोन नं.: 26315530, 26821348
Website: www.rooprekha.com
E-mail: contact@manavmandir.info

इस अंक में

01. आर्ष-वाणी - 5
02. बोध-कथा - 5
03. शाश्वत स्वर - 6
04. गुरूदेव की कलम से - 7
05. चिंतन-चिरंतन - 14
06. कहानी - 16
07. गीत - 17
08. तंन्त्र-विद्या - 18
09. मुक्ति मार्ग - 19
10. कहानी - 23
11. तीर्थंकर-गाथा - 27
12. बेताल पच्चीसी-5 - 30
13. स्वास्थ्य - 31
14. बोलें-तारे - 32
15. समाचार दर्शन - 34

रूपरेखा-संरक्षक गण

श्री वीरेन्द्र भाई भारती बेन कोठारी, ह्युष्टन, अमेरिका
डॉ. प्रवीण नीरज जैन, सेन् फ्रेंसिस्को
डॉ. अंजना आशुतोष रस्तोगी, टेक्सास
डॉ. कैलाश सुनीता सिंघवी, न्यूयार्क
श्री शैलेश उर्वशी पटेल, सिनसिनाटी
श्री प्रमोद वीणा जवेरी, सिनसिनाटी
श्री महेन्द्र सिंह सुनील कुमार डागा, बैंकाक
श्री सुरेश सुरेखा आबड़, शिकागो
श्री नरसिंहदास विजय कुमार बंसल, लुधियाना
श्री कालू राम जतन लाल बरड़िया, सरदार शहर
श्री अमरनाथ शकुन्तला देवी, अहमदगढ़ वाले, बरेली
श्री कालूराम गुलाब चन्द बरड़िया, सूरत
श्री जयचन्द लाल चंपालाल सिंघी, सरदार शहर
श्री भंवरलाल उम्मेद सिंह शैलेन्द्र सुराना, दिल्ली
श्रीमती कमला बाई धर्मपत्नी स्व. श्री मांगेराम अग्रवाल, दिल्ली
श्री प्रेमचन्द ओमप्रकाश जैन उत्तमनगर, दिल्ली
श्रीमती मंगली देवी बुच्चा धर्मपत्नी स्व. शुभकरण बुच्चा, सूरत
श्री पी.के. जैन, लॉर्ड महावीरा स्कूल, नोएडा
श्री द्वारका प्रसाद पतराम, राजली वाले, हिसार
श्री हरबंसलाल ललित मोहन मित्तल, मोगा, पंजाब
श्री पुरुषोत्तमदास बाबा गोयल, सुनाम, पंजाब
श्री विनोद कुमार सुपुत्र श्री बीरबल दास सिंगला,
श्री अशोक कुमार सुनीता चोरड़िया, जयपुर
श्री सुरेश कुमार विनय कुमार अग्रवाल, चंडीगढ़
श्री देवकिशन मून्दडा विराटनगर नेपाल
श्री दिनेश नवीन बंसल सुपुत्र
श्री सीता राम बंसल (सीसवालिया) पंचकूला
श्री हरीश अलका सिंगला लुधियाना पंजाब
श्री केवल आशा जैन, टेम्पल, टेक्सास
श्री चैनरूप सुशील कुमार पारख, हनुमानगढ़
श्री श्यामलाल वीणादेवी सातरोदिया, हिसार

श्री उदयचन्द राजीव डागा, ह्युष्टन
श्री हेमेन्द्र, दक्षा पटेल न्यूजर्सी
श्री प्रवीण लता मेहत्ता ह्युष्टन
श्री अमृत किरण नाहटा, कनाडा
श्री गिरीश सुधा मेहता, बोस्टन
श्री राधेश्याम सावित्री देवी हिसार
श्री मनसुख भाई तारावेन मेहता, राजकोट
श्रीमती एवं श्री ओमप्रकाश बंसल, मुक्सर
डॉ. एस. आर. कांकरिया, मुम्बई
श्री कमलसिंह-विमलसिंह बैद, लाडनूं
श्रीमती स्वराज एरन, सुनाम
श्रीमती चंपाबाई भंसाली, जोधपुर
श्रीमती कमलेश रानी गोयल, फरीदाबाद
श्री जगजोत प्रसाद जैन कागजी, दिल्ली
डॉ. एस.पी. जैन अलका जैन, नोएडा
श्री राजकुमार कांतारानी गर्ग, अहमदगढ़
श्री प्रेम चंद जिया लाल जैन, उत्तमनगर
श्री देवराज सरोजबाला, हिसार
श्री राजेन्द्र कुमार केडिया, हिसार
श्री धर्मचन्द रवीन्द्र जैन, फतेहाबाद
श्री रमेश उषा जैन, नोएडा
श्री दयाचंद शशि जैन, नोएडा
श्री प्रेमचन्द रामनिवास जैन, मुआने वाले
श्री संपतराय दसानी, कोलकाता
लाला लाजपत राय, जिन्दल, संगरूर
श्री आदीश कुमार जी जैन, दिल्ली
मास्टर श्री बैजनाथ हरीप्रकाश जैन, हिसार
श्री केवल कृष्ण बंसल, पंचकूला
श्री सुरनेश कुमार सिंगला, सुनाम, पंजाब
श्री बुधमल राजकरण, तेजकरण सिंघी, सरदार शहर

आर्ष-वाणी

नैंन छिन्दन्ति शस्त्राणि, नैंनं दहति पावकः
न चैंनं क्लेदयन्त्यापो, न शोषयति मारूतः।

-श्रीमद् भगवद्गीता

अर्थात- यह आत्मा न तो कभी किसी शस्त्र द्वारा खण्ड-खण्ड होती है। न इसको अग्नि द्वारा जलाया जा सकता है। न जल द्वारा भिगोया या वायु द्वारा सुखाया जा सकता है।

बोध-कथा

संत को मार्ग पर लाने का तरीका

पाटलिपुत्र की नगरवधू कोशा की सुंदरता की चर्चा दूर-दूर तक होती थी। उसकी एक मुस्कान पर बड़े-बड़े लोग सब कुछ लुटाने को तैयार रहते थे। एक दिन शाल्वन बुद्ध पीठ के मठाधीश वसंत गुप्त उधर से निकले तो कोशा पर उनकी नजर पड़ी। उन्होंने उसे देखा तो सब कुछ भूल गए। वे उसी संत वेश में नगरवधू के घर जा पहुंचे। कोशा का अनुमान था कि वे भिक्षाटन के लिए आए होंगे, सो उसने उनका खूब स्वागत-सत्कार किया और अपनी एक सेविका को उन्हें भिक्षा देने के लिए कहा। पर वसंत गुप्त का इरादा तो कुछ और ही था। वह तो प्रणय निवेदन कर रहे थे।

कोशा के लिए यह किसी आघात से कम न था। पर उसने तिरस्कार करना तो ठीक न समझा, पर शर्त लगा दी कि इतनी रत्नराशि वे प्रस्तुत कर सकें, तो ही उनकी मनोकामना पूर्ण हो सकेगी। वसंत गुप्त चल दिए और जिन धनिकों से उनका परिचय था, उन सभी से रत्न मांगकर उन्होंने उतनी संपदा जुटा ली। फिर वे लंबे डग भरते हुए आए और वह सब कुछ कोशा के चरणों में रख दिया। कोशा ने उन रत्नों से अपने पैर रगड़-रगड़ कर घिसे और उन्हें नाली में फेंक दिया। यह देख वसंत गुप्त घबराए। कोशा ने उनसे कहा- 'देव, आप का वेश और तप मेरे मलिन शरीर से कहीं ज्यादा श्रेष्ठ है। उसका उपार्जन इसी प्रकार नाली में चला जाएगा, जैसे कि यह रत्नराशि इस गंदी नाली में बह गई।' कोशा की यह बात वसंत गुप्त के हृदय को तीर की तरह चुभी। अचानक उनका विवेक जागा। वे लज्जित हुए। वे कोशा को प्रणाम कर उलटे पैर लौट गए। कोशा के मन के ऊपर से बोझ कम हो गया।

शाश्वत स्वर

स्वयं का उद्धार ही सबसे नेक काम है

हमारे साधु-संत और धर्म गुरू हमें हमेशा यह सिखाते हैं कि अपने से पहले दूसरों की सोचें। परंतु यहां आसमान में उड़ने से पहले यह सिखाया जाता है कि पहले खुद को बचाओ फिर दूसरों की मदद करना। जिस व्यक्ति में थोड़ी सी भी बुद्धि और विवेक होगा, वह यह समझ जाएगा कि हम दूसरों की सहायता तभी कर सकते हैं, जब हम स्वयं सक्षम हों। जो खुद बीमार होगा, वह क्या किसी की सहायता करेगा। जो खुद कर्जे में हो वह क्या किसी की आर्थिक मदद करेगा। जो स्वयं दुखों में फंसा हो, वह क्या किसी को खुशी देगा। जो स्वयं अज्ञान में ढका हो, वह ज्ञान का दीया क्या जलाएगा।

इसलिए सौ बातों की एक बात यह कि पहले उपना उद्धार करो, फिर किसी और के उद्धार की सोचो। गीता के छठे अध्याय में कृष्ण, अर्जुन से कहते हैं- एक ही व्यक्ति आपका उद्धार कर सकता है और एक ही व्यक्ति आपको बर्बाद कर सकता है और वह है आप स्वयं।

पर असल समस्या यह है कि हम सोचते हैं कि हम दूसरे को ठीक कर सकें और इससे भी बड़ी बात हम यह सोचते हैं कि कोई और मुझे दुखी और परेशान कर रहा है। आध्यात्मिक गुरू चाहे कितना भी हमें समझाने की कोशिश करें, परंतु हम अपनी यह धारणा नहीं बदलते। हम अपनी इस सोच से टस से मस नहीं होते।

यही हाल आजकल के लोगों का है। हर कोई दूसरे को ठीक करना चाहता है, परंतु स्वयं को कोई ठीक नहीं करना चाहता। आप एक ही व्यक्ति का उद्धार कर सकते हैं और वह आप स्वयं हैं।

अब प्रश्न यह है कि अपना उद्धार कैसे करें? इसके लिए शास्त्र तीन तरह के योगों पर प्रकाश डालते हैं। पहला कर्मयोग, जिसमें मनुष्य अपने जीवन में श्रेष्ठ लक्ष्य बना कर मन और बुद्धि को उस लक्ष्य से जोड़ देता है। दूसरा है भक्तियोग, जिसमें मन को प्रभु के चरणों में लगा कर हर कार्य को निमित्ति भाव से करता है। तीसरा है ज्ञानयोग, जिससे अज्ञान रूपी अंधकार को हटाकर मनुष्य ज्ञान का दीपक जलाता है। यही है अपने उद्धार का सर्वोत्तम मार्ग!

लेकिन सही मार्ग की खोज में व्यक्ति पता नहीं कितना समय गंवा बैठता है।

-प्रस्तुति : निर्मला पुगलिया

विकास-यात्रा आदमी की

काल में सब कुछ बीतता है, स्वंय काल को छोड़कर। लेकिन हम कहने के आदी हैं कि काल ही बीत रहा है, हम ज्यों के त्यों हैं। क्या यह एक महज सनक है? अनादि-काल से मानव मृत्यु के अनिवार्य क्रम को देखता आया है,पर अमरता में विश्वास करता है, करना चाहता है, उसे सत्य पर प्रतिष्ठापित न कर पाने पर कल्पना पर टिकाता है पर छोड़ नहीं पाता। क्या यह एक महज पागलपन है?

जन्म से शरीर को लेकर जो आता है और शरीर के निस्पंद होने पर जिसके अस्तित्व का पता तक नहीं लग पाता, वह अपने को अनादि-काल से अशरीरी कल्पित करता आया है। आत्मा या मन के देहातीत अस्तित्व की प्रकल्पना के साथ उसकी भावनाएं जुड़ी हैं। क्या यह महज दीवानगी है?

विकास का क्रम चलता जाता है। आदमी बदलता जाता है। गुफा का स्थान सौ मंजिली इमारत ले लेती है। चमड़े और वल्कल का स्थान रेशमी-सूती कपड़े ले लेते हैं। पत्थर के पहियों पर टिकी बांस की दो खपच्चियों का स्थान वायुमान ले लेते हैं। लेकिन आदमी के भीतर कुछ है, जो तब था, अब भी वहीं का वहीं है। क्यों?

''सरलता से सुख-शांति मिलती है'-पांच हजार वर्ष पहले एक पेपिरस की छाल पर मिश्र के प्रागैतिहासिक युग के एक सम्राट लिखकर मर गए, अपने बेटे के नाम। ''धन्य हैं वे जो कि सरल हैं क्योंकि प्रभु को वे ही देखेंगे'' दो हजार वर्ष पूर्व नजारथ के एक बढ़ई का बेटा कह गया। आज नब्बे करोड़ आदमी उसका नाम लेते हैं। पवित्रता और सादगी, प्रेम और सदाचार की बात आज भी हर देश की हर भाषा की हर नीति-पुस्तक कहती है।

जानामि धर्म नच मे प्रवृत्तिःजानाम्यधर्मं नच मे निवृत्ति-तीन हजार वर्ष पहले दुर्योधन के सामने जो समस्या थी कि वह धर्म को जानकर भी उसका आचरण नहीं कर पाता, अधर्म को जानकर भी उससे निवृत्त नहीं हो पाता। आज भी वह समस्या हर व्यक्ति के मन की है। विचार से जो ग्रहण किया जाता है उसे भावना नहीं मानती और भावना जिसे पकड़कर बैठ जाती है उसे विचार मान्यता देता ही नहीं।

आदिम और आदमी-दो शब्दों में मात्रा का जरा-सा अन्तर है लेकिन दोनों के मध्य एक

लम्बा इतिहास झूल रहा है। घटनाएं पर घटनाओं लदी है। परिवर्तनों पर परिवर्तन फैले हैं, लेकिन अन्तर्कक्ष में कही आदिम आदमी को गले से चिपटाए है, आदमी आदिम को मरे बच्चे की लाश ढोने वाली बंदरी की तरह छाती से चिपटाए घूम रहा है।

ऐसा कोई देश नहीं जहां सत्य, प्रेम, सदाचार, मानवता के मूल्यों को नकारा गया हो, और ऐसा कोई देश नहीं, जहां इन्हे जीवन में सर्वतो भावेन स्वीकारा गया हो।

बाइबिल के उन आदेशों में 'तुम हिंसा नहीं करोगे' 'दूसरे की पत्नी के साथ व्यभिचार नहीं करोगें' 'किसी के द्रव्य का अपहरण नहीं करोगें' आदि बुनियादी नैतिक तत्व आते हैं।

उससे पूर्व हम्मूखी की आचार-संहिता तथा न्याय-तालिका में 'आंख' के बदले आंख, कान के बदले कान का सीधा-सपाट दंड-विधान मिलता है। हत्या, व्यभिचार, स्वत्व-हरण को बारीकी से परिभाषित कर न केवल उनका परिवर्जन किया गया है बल्कि उसे अमान्य करने पर दंड-विधान भी सुझाया गया है।

असीरिया और बैबीलोनिया की सभ्यता से पूर्व प्राचीन पश्चिम के संसार में कोई समाज-व्यवस्था नहीं। अतः किसी नैतिक संहिता का संकेत नहीं मिलता। क्योंकि नैतिकता समाज-सापेक्ष है। अकेला व्यक्ति न अनैतिक हो सकता है, न नैतिक ही। वह मात्र अकेला है।

संसार का प्राचीनतम आदमी सिनेन्थ्रॉपस पेकिनीज है, जिसके अवशेष चीन में मिलते हैं-दस लाख वर्ष प्राचीन। यह मांसभक्षी तो है ही, नरमांसभक्षी भी है। यह व्यक्ति न नैतिक है, न अनैतिक। क्योंकि दोनों के लिए कसौटी रूप में नैतिकता का भावबोध अपेक्षित है जो कि उसमें है ही नहीं। समीप सोयी पत्नी को भूख लगने पर मार खाने में अथवा किसी कंद मूल को उखाड़कर चबा जाने में उसके लिए कोई अंतर है ही नहीं। इस आदमी का कोई परिवार नहीं है, समाज नहीं है, अतःकिसी के प्रति कोई दायित्व-बोध नहीं है जो कि नैतिकता की आधार-शिला होता है।

उसके बाद जावा में पिथेकेन्थ्रोपस जाति का आदमी मिलता है जो लगभग पांच लाख वर्ष पूर्व का है। इसका भी कोई परिवार या समाज नहीं है, अतःनैतिक चेतना का अस्तित्व नहीं है। लेकिन मानवीय संज्ञा के साथ इसके आंतरिक मन का थोड़ा-सा तादात्म्य इसे नरभक्षी की स्थिति के ऊपर उठा लाया है।

नीएण्डर थल क्रोमेग्नन और रोडेशियन आदमी परिवार में रहता है, लेकिन पारिवारिकता का बहुत ही आदिम रूप भावना के स्तर पर इसमें अंकुरित हो पाया है। इसका परिवार स्थिर नहीं है, न पारिवारिकता की भावना ही। विकास की स्थितियों से गुजरते हुए परिवार और कबीले के रूप में सामूहिक जीवन की ओर धीरे-धीरे बढ़ रहा है और इसके समानान्तर ही बढ़ रही है सामूहिक दायित्व, करूणा और अपनत्व की मूल भावना।

आठ हजार वर्ष पूर्व होमोसेपीन जाति का आदमी आता है जो कि मानवीय उद्‌विकास की परम्परा में अन्तिम व्यक्ति है। यह सामाजिक जीवन में प्रवेश कर चुका है तथा नैतिक दायित्व बोध के एक सामान्य स्तर तक पहुंच रहा है। भावना और विचार के स्तर पर नैतिक चेतना तथा किंचित् जागरण इसमें परिलक्षित होता है। परिवार के स्थान पर कबीले बन गए हैं तथा पूर्व और उत्तर प्रस्तर युगीन सभ्यताओं का विकास होता जा रहा है।

पांच हजार वर्ष पूर्व असीरिया और बैबीलोनिया, मिस्र तथा भारत, चीन तथा फारस में सभ्यताओं का विकास हो जाता है। लिपि खोज निकाली गई है। यहां हम बैबीलोनिया में हम्मूखी की आचार-संहिता के रूप में संसार की प्रथम नैतिक संहिता देखते हैं। आज हम्मूखी की संहिता में क्रूरता और बर्बरता का अनुभव हो सकता है। लेकिन पूर्व युगों के तमसांधकार में यह एक आलोकदीप बनकर टिमटिमा रही है। समाज, राज्य, शासन, न्याय, दण्ड प्रणाली-सबका बीजारोपण हो गया है तथा व्यक्ति से सामूहिक उत्तरदायित्व न केवल अपेक्षित किया जा रहा है बल्कि उसके लिए अनेक विधि-निषेध अनिवार्य भी हैं, जिनका खण्डन अपराध मानकर दण्डित किया जाता है।

नैतिकता मूलतःआत्म संयम है, जो सामूहिक दायित्व बोध से व्यक्तिगत जीवन में फलित होता है और सामूहिक दायित्व बोध समूह-चेतना से और अंततःवह सामूहिक जीवन की आवश्यकता से । प्रकृति से संघर्ष चल रहा है, मानव का मानव से कबीले और ग्रामों-नगरों के स्तर पर संघर्ष चल रहा है। अतः सामूहिकता का दायित्व बोध एक अनिवार्य अपेक्षा बनता जा रहा है। सभ्यता का विकास आदिम से आदमी की ओर पहला कदम है तथा हम्मूखी की आचार-संहिता मानवीय नैतिकता के पथ का प्रथम मील पत्थर या कालांकन बिन्दु है।

मिस्र के पिरामिडों मे प्राचीन फराओं के आदेश-निर्देश तथा स्फुट विचार पेपीरस वृक्ष की छाल पर कीलाक्षर लिपि 'हीरोग्लिफिक्स' के रूप में अंकित हैं जिनमें सरलता, विनय, बुद्धिमता जैसे मानवीय गुणों का न केवल उल्लेख किया गया है बल्कि जीवन में उनकी उपयोगिता पर बुद्धिमत्तापूर्ण विचार मिलते हैं।

मोजेज यहूदियों को मिश्र की गुलामी से निकालकर सिनाई पर्वत की तलहटी में लाता है। वहां प्रभु की उंगलियों से सिनाई पर्वत के सर्वोच्च शिखर पर खुदी दस-बिन्दुओं की आचार संहिता (टेन कमाण्डमेन्ट्स) मिलती हैं जो हम्मूखी के बाद एक अन्य अद्वितीय कालांकन बिन्दु है-आदिम से आदमी तक मानव के नैतिक-सामाजिक जीवन-विकास के इतिहास का। 'तुम किसी की हत्या नहीं करोंगे', 'किसी के धन या पत्नी का अपहरण नहीं

करोगें', 'चोरी नहीं करोगे' 'किसी अजनबी को परेशान नहीं करोगे' आदि वाक्य धर्म की भूमिका पर नैतिकता के नवनिर्माण के सूचक हैं।

मोजेज के बाद यहूदियों का तीव्रता से विकास और प्रसार हुआ। राजसत्ता का उदय हुआ तथा शोषण और अन्याय से नागरिक जीवन गिरता गया विनाश के गह्वर की ओर। ईसाइयों, माइका, होसिया, इजाकील आदि पैगम्बरों ने कर्मकांड और बलिदान के स्थान पर शान्ति और न्याय की आवाज उठाई। विश्व के प्रथम अंतराष्ट्रीयवादी पैगम्बर ईसाइया के शब्द गूंजे- ''और तब ऊंचे उठे पर्वतों के शिखर चूर-चूरकर भूमिसात कर दिय जाएंगे तथा गहरे गर्तों की उस मिट्टी को पाटकर ऊपर उठा दिया जाएगा। भेड़िया मेमने के साथ खेलेगा तथा छोटे-छोटे बच्चे सांपों के फन पर अंगूली रखकर क्रीड़ा करेंगे....तब लोग तलवारों को पीटकर हलों के फाल बना लेंगे और भालों से घास संवारने के औजार...युद्ध की कला मानव सदा के लिए भूल जाएगा और फिर कभी नहीं सीखेगा...सारे देश आपस में मिलकर एक सत्ता के अनुशासन मे समझौते पूर्वक अपने झगड़े का न्याय निर्णय पांएगे।'

ईसामसीह के जन्म के साथ यहूदी धर्म और समाज में नैतिक मूल्यों का परमोत्कर्ष हुआ। प्रेम और अंहिसा को जीवन के सर्वोच्च मूल्यों की सत्ता मिली। नजारथ के कंगाल बढ़ई के बेटे ने कहा-धन्य हैं वे जिनके अन्तःकरण शुद्ध हैं, क्योंकि वे प्रभु को देंखेंगे और धन्य हैं शान्ति के संवाहक क्योंकि वे प्रभु के पुत्र कहे जाएंगे.....अभिशाप देने वाले को भी आशीर्वाद दो, बुरा करने वाले का भी भला करो, दुर्व्यवहार करने वाले के प्रति भी शुभ कामना करो...प्रभु का राज्य तुम्हारे भीतर ही है.... सारे नियमों का सार यही है कि प्रभु को प्यार करो तथा पड़ौसी को अपने जैसा मानकर उससे प्यार करो।'

सेवा और त्याग, अपरिग्रह और अंहिसा की भावना का परमोत्कर्ष भारत में भगवान महावीर और बुद्ध के अवतरण पर हुआ। महावीर के पूर्ववर्ती तीर्थंकरों की एक महती परम्परा रही है। प्रथम तीर्थंकर ऋषभ ने असि, मसि और कृषि विद्याओं का सूत्रपात किया। पार्श्व ने सामूहिक धर्म साधना की आधारशिला रखी। महावीर ने अंहिसा को जीवन के सारे मूल्यों पर सर्वोच्च प्रतिष्ठा दी और उसको केन्द्र मानकर सारे अन्य व्रतों को परिधि में निहित किया। हिंसा का सूक्ष्मतम विवेचन कर भगवान ने उसका वर्जन किया-महाव्रत के स्तर पर निर्विकल्प अहिंसा तथा अणुव्रतों के स्तर पर सविकल्प अंहिसा की प्रतिष्ठापना की। अणुव्रतों के रूप में सामाजिक पारिवारिक जीवन में नैतिकता के आधारभूत सूत्र उन्होंने तलस्पर्शी दृष्टि तथा व्यापक विवेचन-विश्लेषण के साथ प्रतिपादित किए। महावीर नैतिकता को अध्यात्म के अन्तर्कक्ष में ले गए, जहां संपूर्ण मन-प्राण का रूपान्तरण होकर चेतना

के सारे ज्ञान और कर्मस्तरों पर अंहिसा, सत्य, अस्तेय, अपरिग्रह और ब्रह्मचर्य आदि नैतिक मूल्यों की प्रतिष्ठा हो जाती है।

भगवान बुद्ध ने 'शील' अर्थात चरित्र पर अध्यात्म साधना की पीठिका के रूप में पर्याप्त बल दिया तथा अपने 'पंचशील' में हिंसा, मद्यपान, द्यूत, परस्त्रीगमन और असत्य का परिवर्जन किया। दाम्पत्य जीवन में पति-पत्नी को सत्य की साकार प्रतिमांए बनकर जीने की प्रेरणा दी। महाकरुणा को उन्होंने अपने जीवन में साकार किया और धर्म की आधारशिला के रूप में रखा।

यूनान में सुकरात ने अंतरात्मा को देवताओं से ऊपर मानकर मृत्युदण्ड पाया उसका शिष्य भी साम्यमूलक समाज रचना के अपने उच्च नैतिक आदर्शों के लिए राजतंत्र का कोप-भाजन बनकर बलिदानी हुआ। अरस्तू ने राज्य और समाज के स्तर पर नैतिक मूल्यों की व्यापक एवं गहरी व्याख्या की। यूनान के 'स्ताइक' दार्शनिकों ने समभाव, 'एपीक्यूरियनों' ने अनुद्विग्न प्रसन्न जीवन को आदर्श रूप में रखा। यूनानी दार्शनिकों में आगे चलकर प्लोटिनुस ने आदर्श नैतिक समाज की प्रकल्पना प्रस्तुत की। सम्पूर्ण विश्व को सत्यं शिवं सुन्दरम् के सूत्र का प्रदाता यूनान का महान दार्शनिक प्लेटो था जिसने आचारीय संदर्भों में जीवन के समस्त पक्षों की व्याख्या की।

इधर चीन में कन्फ्यूसियस और लाओत्जे हुए। लाओत्जे का 'ताओ तेह किंग' संसार के महानतम आचारमूलक दर्शन ग्रन्थों में से एक है। उसने ताओ की जो व्याख्या की, वह इतनी व्यापक है कि जीवन का कोई भी पक्ष उससे अपृष्ठ नहीं रहा है। ताओ का अर्थ है शक्ति, सहनशीलता, साहस, सृजनात्मकता परिवर्तन शीलता, एकता, लयबद्धता और जीवन के सारे रचनात्मक गुण। कन्फ्यूसियस ने सुव्यवस्था पर बल दिया। उसका सूत्र था- 'जैसा व्यवहार दूसरों से अपेक्षित करते हो वैसा उनके साथ करो।' यह ईसामसीह का भी जीवन सूत्र था तथा 'आत्मनः प्रति कूलानि परेषां न समाचरेत्' के संस्कृत सुभाषित में भी इसी भावना को व्यक्त किया गया है। उसने कहा कि राष्ट्र को सुधारने का उपाय है समाज को सुधारना, जिसका उपाय है परिवार को सुधारना और अन्ततः व्यक्ति को सुधारना। व्यक्ति को तभी सुधारा जा सकता है जबकि उसका मन परिवर्तित हो। अन्तःपरिवर्तन का सूत्र नैतिकता का आधार है। संयम नैतिकता की आधारशिला है। दायित्व बोध नैतिकता का उत्स है तथा स्व-पर समता उसका कलेवर है। इसे दार्शनिकों, पैगम्बरों तथा संतों ने हर देश काल में स्वीकार किया है।

यह सर्वसम्मत है कि आदिम से आदमी तक की विकास यात्रा केवल भौतिक मानसिक

दिशाओं में ही नहीं अपितु आचारीय और नैतिक दिशाओं में भी हुई है- नैतिक चेतना शून्य सिनेन्थ्रापस से महाकरुणाशील बुद्ध, परम-प्रेम-प्रतिमा क्राइस्ट तक, परम साम्य मूर्ति महावीर तक विकास की लम्बी रेखाएं स्पष्ट दृष्टि-गोचर हो रही हैं। नरमांस भक्षण से दूध को भी शाकाहार के अन्तर्गत न मानने वाले टीटोटलर व्यक्ति तक भावना का बहुत बड़ा परिष्कार हुआ है। इसे नकारा नहीं जा सकता। क्योंकि यह एक स्वयं प्रमाणित सत्य है।

मध्ययुगों में धर्म का रूप संप्रदायों की लोह-प्राचीरों में सिकुड़कर विकृत होता गया। अंध परम्परावाद, आडम्बर, परमत-विरोध घृणा के जहर से लोक-मानस भर गया। इसके साथ ही उसकी बुनियाद कमजोर होती गई और अठारहवीं शताब्दी की वैज्ञानिक तकनीकी क्रांति ने इसके ढांचे को प्रथम आघात में ही चूर-चूरकर बिखेर दिया।

इससे आस्था का एक संकट पैदा हुआ, जिसने नैतिक मूल्यों की भौतिक परीक्षा करने की जिद्द ठान ली और उससे भी आगे बढ़कर बिना किसी परीक्षा के धर्म से युगों तक जुड़े रहने के कारण आध्यात्मिकता और नैतिकता को भी सीधे सपाट शब्दों में नकार दिया।

मूल्यों का यह संकट अपने उत्तरकाल में से गुजर रहा है। अतीत को सम्पूर्णतः आंख मूंदकर स्वीकार करने वाली पीढ़ियों के प्रति विद्रोह रूप में उसे एक बारगी सम्पूर्णतः नकार जाने वाली पीढ़ी उभरकर ऊपर आई, जिसने उसे सम्पूर्ण मूल्यों से नकार डाला, क्योंकि वह अतीत था।

जिस काल में कुछ महापुरूष पुनः आए। स्वामी विवेकानन्द ने जहाँ पश्चिम के देशों का वेदान्त का सन्देश दिया, वहां भारतीयों को उनकी संकीर्ण वृत्तियों, नैतिक दुर्बलताओं, प्रेम और करूणा के अभाव के लिए फटकारा। उन्होंने स्पष्ट कहा-जो धर्म एक भूखे को अभी रोटी का टुकड़ा नहीं दे सकता। और परलोक में स्वर्ग-सुख देने का वादा करता है उसमें मेरा विश्वास नहीं है। अस्पृश्यता, अंध परंपराओं तथा अनैतिकता के लिए उन्होंने समग्र भारतीय समाज को लताड़ा- 'धन और सत्ता जहां कुछ भी नहीं कर पाती, वहां चरित्र, जीवन शुद्धि तथा विश्वास कठिनाइयों की लोह प्राचीरों को चकनाचूर कर आगे बढ़ जाता है।' सेवा और प्रेम को उन्होंने अध्यात्म का आधार माना। इस प्रेरणा के स्रोत थे उनके गुरू स्वामी श्रीरामकृष्ण परमंहस जो इस युग के कुछ के महानतम धार्मिक व्यक्तियों में से एक थे। वे कहते थे- 'जीव ही शिव है' अतः वे सबके प्रति विनम्रता, प्रेम, सेवा और सम्मान की भावना रखते थे और इसे अध्यात्म का आधार मानते थे।

इस युग के दूसरे महत्वपूर्ण व्यक्ति महर्षि अरविन्द थे। प्राणि विकास की महती परम्परा का सर्वेक्षण कर उन्होंने घोषित किया कि एककोषीय जीव-अमीबा से प्रणासत्ता

विकसित होकर मानव तक आ गयी है। लेकिन विकास की अगणित कड़ियां अभी शेष हैं। अति मानव के रूपों मे मानव का अगला प्रतिरूप आएगा जो पराभौतिक एवं अतिमानसिक शक्तियों का स्वामी होगा। वह अनैतिकता के लवलेश से भी अस्पृष्ट प्रेम और आनन्द, सन्तोष और शान्ति का साकार रूप होगा। अरविन्द ने आशा व्यक्त की कि मानव का भविष्य उज्जवल होगा, सृष्टि का विकास आगे से आगे चलता रहेगा। और भारत अध्यात्म तथा नैतिकता के क्षेत्र में सारे विश्व का अग्रगामी मार्ग दर्शक होगा।

इस युग की एक अन्य महान विभूति रमण महर्षि थे जिन्होंने आत्म-बोध तथा सदाचार का संदेश अरूणाचल पर्वत से देश-विदेश को दिया। धर्म और नैतिकता के सारभूत तत्वों की उन्होंने अध्यात्म के संदर्भ में पुनर्व्याख्या की। राष्ट्रीय स्तर पर उनके विचारों ने नैतिक जागरण का प्रकाश विकिरण किया।

इसी सदी में महात्मा गांधी आए। आइन्स्टीन के अनुसार आने वाली पीढ़ियों के लिए यह विश्वास करना कठिन होगा कि मानव के रक्त-मांस-मय पार्थिव कलेवर में अध्यात्म और नैतिकता की सत्ता इतनी निर्मल दीप्ति के साथ कभी साकार हुई थी। अंहिसा को उन्होंने एक नैतिक नियम ही नहीं अपितु एक सामाजिक शक्ति का रूप देकर नैतिक शक्ति से विश्व के एक महान साम्राज्य की संगठित पाशविक शक्ति का प्रतिकार किया। कवीन्द्र रवीन्द्र के शब्दों में उनके माध्यम से विश्व को भारत का शाश्वत सन्देश मिला कि नारायण की आत्मिक सत्ता, जो नारायणी सेना की भौतिक पाशविक सत्ता पर विजयी होती रही है, भविष्य में भी होती रहेगी।

सत्य को प्रभु मानने वाला यह व्यक्ति प्रेम-सत्ता और आत्म-सत्ता की अदम्य शाक्ति का साकार प्रतिरूप था जिसने अहिंसा के सामूहिक प्रयोगों द्वारा विदेशी शासनतंत्र का ही प्रतिरोध नहीं किया, अपितु राष्ट्र और समाज के सारे मानस को रूपान्तरित किया। देवत्व का यह परम उपासक जीवन भर मानव चेतना के अतल गहरों में उतरकर उसे विकृत और लक्ष्यच्युत करने वाली पशुता से जूझता ही रहा और इसी उपक्रम में प्राण विसर्जित कर गया।

उद्विकास की यह महागाथा प्रगति का ही अंकन करती है, प्रतिगति का कभी और कभी भी नहीं। मानवता का अतीत गौरवशाली रहा है, भविष्य उससे भी अधिक होगा, ऐसा मेरा विश्वास है।

महावीर की सत्य-संधित्सा

○ संघ प्रवर्तिनी साध्वी मंजुलाश्री

एक व्यक्ति प्यास से व्याकुल हो रहा था। उसे पानी की चाह थी, पर वह उसके लिए श्रम नहीं करना चाहता था। बिना श्रम उसकी प्यास नहीं बुझी, तब उसने परिश्रम करना शुरू किया, पर श्रम कहां करना चाहिए, इस ज्ञान के अभाव में उसने निर्जल भूमि को खोदा। पानी नहीं मिला ज्ञान और क्रिया का योग हुआ। भूमि सजल थी और खोदने का श्रम भी किया गया पर निष्ठा का अभाव था। पांच-सात हाथ भूमि खोदी, जल नहीं निकला तो व्यक्ति अधीर होकर दूसरे स्थान को खोदने लगा। वहां पर भी जल नहीं मिला। इस प्रकार चार-पांच स्थानों पर भूमि को खोदा गया पर सफलता नहीं मिली और व्यक्ति प्यास से तड़पता रहा।

एक दूसरा व्यक्ति जिसमें ज्ञान, क्रिया व निष्ठा का योग था, उसने अपने ज्ञान से भूमि का परीक्षण किया। परिश्रमपूर्ण खनन किया और तब तक उसका धैर्य विचलित नहीं हुआ, जब तक उसे भूमि पर तैरता हुआ जल दिखाई नहीं दिया। खोदते-खोदते जल निकल आया। पानी पीकर वह स्वयं तृप्त हुआ ही, लाखों-लाखों प्राणियों का सहयोगी बनकर कृतकृत्य हो गया।

भगवान् महावीर ने जीवन की सफलता के लिए ज्ञान, क्रिया और निष्ठा का होना आवश्यक बताया है। सत्यबोध जीवन का सर्वोपरि लक्ष्य है। इस लक्ष्य की सिद्धि में अज्ञान और अकर्मण्यता बाधक है, इसी प्रकार आतुरता भी बाधक है। सत्य को पाने वाले व्यक्तियों का पथ प्रदर्शन करते हुए भगवान् महावीर ने कहा- 'सच्चंमि धिइं कुव्वहा' सत्य में धैर्य रखो। धैर्य के अभाव में व्यक्ति सत्य के समीप पहुंचकर भी उसे प्राप्त नहीं कर सकता।

वैज्ञानिक लोगों की आस्था कितनी अद्भुत होती है? वे भौतिक अभिसिद्धि के लिए सैकड़ों वर्षों तक धैर्य से कार्यरत रह सकते हैं, पर एक अध्यात्मनिष्ठ व्यक्ति आन्तरिक उपलब्धि के अन्तिम छोर पर आकर अपना धैर्य खो बैठता है। यह अधीरता ही अध्यात्म का प्रकाश फैलने में बाधा बन रही है।

भगवान् महावीर को सत्य की तीव्र जिज्ञासा थी। वे जनसंग्रह को महत्व नहीं देते थे, वे जन-जन को सत्य की एषणा में लगाने को देते थे। जब तक उन्हें सत्य की प्राप्ति नहीं

हुई, उन्होंने सत्य का उपदेश भी नहीं दिया। सत्योपलब्धि के बाद भी उन्होंने यह कभी नहीं कहा कि मैं जो बताता हूं, उसी का अनुसरण करो, किन्तु उनका स्पष्ट और प्रबल उद्घोष था, सत्य की शोध करो। किसी अन्य के द्वारा शोधित सत्य से भी व्यक्ति लाभान्वित हो सकता है, पर उसी में तृप्ति का अनुभव करना 'सत्य पर आवरण' डालना है। भगवान् महावीर एक परम्परा-बद्ध धर्म-संघ के अनुशास्ता थे। फिर भी वैचारिक अभिनिवेश से सर्वथा मुक्त थे। उनके विचारों की उदारता ने कभी यह आग्रह नहीं किया कि आराधना या सत्य की साधना किसी अमुक वेशभूषा, सम्प्रदाय में ही हो सकती है।

वेशभूषा के साथ धर्म का अनुबन्ध हो ही नहीं सकता। इस दर्शन के आधार पर ही भगवान महावीर ने गृहस्थ-वेश में भी मुक्ति का अवकाश दिया है। धर्म आत्मगत नहीं होता तो मुनि का वेश स्वीकार करने पर भी मोक्ष का मार्ग प्रशस्त नहीं हो सकता।

भगवान् महावीर ने संघ-बद्ध साधना की बात बताई थी, किन्तु इसके साथ यह भी कहा था कि कई व्यक्ति धर्म-संघ को छोड़ देने पर भी धर्म से रिक्त नहीं होते और कुछ व्यक्ति धर्म-सम्प्रदाय की सीमाओं में रहकर भी धर्म को आत्मसात् नहीं कर सकते।

भगवान् महावीर के हर अनुयायी का पहला कर्तव्य है कि वह वैचारिक आग्रह को छोड़कर सत्य को अनावृत करने का प्रयास करें।

अन्य लोग हमारे बारे में क्या सोचते हैं, इस चिन्तन से मुक्त होकर अपने लक्ष्य को साधें।

गुरु की सीख

अध्यात्म के प्रति अभिरुचि देखकर पिता ने अपने युवा पुत्र एरिट्रियस को प्रसिद्ध दार्शनिक जीनो के पास शिक्षण हेतु भेजना आरंभ किया। एक दिन एरिट्रियस घर लौटा तो पिता ने पुत्र से प्रश्न किया, 'आज तुमने क्या सीखा?'

पुत्र ने उत्तर दिया, 'मैं समय आने पर आपको बता दूंगा।'

दो-तीन बार फिर प्रश्न करने पर जब यही उत्तर मिला तो पिता के क्रोध का पारावार न रहा। उन्होंने एरिट्रियस को बुरी तरह पीट डाला। एरिट्रियस बिना कुछ बोले मार सह गया और फिर बोला- 'मेरी शिक्षा पूर्ण हुई। आज मेरे गुरु ने सिखाया था कि मनुष्य में क्रोध सहन करने की क्षमता होनी चाहिए।' सत्य का भान होते ही पिता को बहुत ग्लानि हुई और उन्होंने पुत्र को छाती से लगा लिया।

-प्रस्तुति : नूतन जैन

कहानी

बुराइयों का दान करें

○ साध्वी मंजुश्री

एक बार का प्रसंग है। भगवान बुद्ध एक पेड़ के नीचे ध्यानस्थ थे। कड़ाके की सर्दी पड रही थी तेज हवाएं चल रही थी। उसी नगर का निवासी सेठ धर्मपाल गरीबों को कम्बल बांटता हुआ भगवान बुद्ध के पास पहुंचा उसने भगवान बुद्ध से प्रार्थना की हे भगवान! मेरा यह कम्बल जरा आप भी स्वीकार करें। भगवान बुद्ध ने कम्बल के लिए इंकार करते हुए सेठ से पूछा सेठ जी। आपका शरीर तो गर्म वस्त्रों से ढका हुआहै लेकिन आपकी नाक तो खुली है क्या इसे सर्दी नही लगती है। सेठ जी ने कहा-भगवान नाक को ठंड सहन करने की आदत पड चुकी है इसलिए इसे ढकने की जरूरत नहीं है। मेरे शरीर को भी सर्दी गर्मी सहन करने की आदत पड चुकी है। अतः इसके लिए कम्बल की आवश्यकता नहीं है। सेठ ने फिर कहा-भन्ते मैं कुछ और दान करना चाहता हूँ। भगवान ने कहा-सेठ जी आपके पास जितनी भी बुराईयां हैं वे सब दान में मुझे दे दें। सेठ ने कहा भन्ते! मैं आज से असत्य बोलने का त्याग करता हूँ। चाहे कैसी भी परिस्थिति हो झूठ नहीं बोंलूगा। भगवान बुद्ध ने कहा- तथास्तु! और सेठ धर्मपाल को आशीर्वाद दे पुनः ध्यान मग्न हो गये।

सेठ के इस त्याग की चर्चा पूरे नगर में फैल गई। सभी लोग सेठ के त्याग की प्रसंशा करने लगे। बात फैलते-फैलते एक डाकू के कानों में पहुंची। डाकू ने सोचा चलो सेठ अब झूठ नही बोलेगा तो अपनी सारी सम्पत्ति की जानकारी सही-सही दे देगा। रात्रि में डाकू अपने पूरे दल-बल के साथ सेठ के घर पहुंच गया। डाकू ने सेठ से पूछा-सेठ। तुम्हारा धन कहां-कहां छुपा है सही-सही बता दो। सेठ ने अपने वचन का पालन करते हुए अपने सारे खजाने की चाबी डाकू को सौंप दी। डाकू ने सेठ का सारा खज़ाना खाली कर दिया। धन गठडियों में बांध लिया। जाते-जाते डाकू ने फिर पूछा सेठ धन कहीं और तो नहीं छुपा रखा। सेठ ने कहा-भाई अमुक कमरे में जमीन में इतना धन और गडा हुआ है। जब तुमने पूछ लिया तब मुझे बताना ही पडा क्योंकि मैं झूठ नहीं बोल सकता। मैंने अपनी झूठ को भगवान बुद्ध के चरणों में चढा दिया है। सेठ की इस बात का डाकू पर असर हुआ वह मन ही मन सोचने लगा। क्या भगवान बुद्ध मेरे जैसे अपराधी के अपराधों को माफ कर सकते हैं। क्यों न मैं भी अपनी बुराइयों को उनके चरणों में चढाकर उनका भक्त बन जांऊ। इन्ही विचारों में खोया वह डाकू सेठ का सारा धन वहीं छोडकर अपने दल के साथ भगवान बुद्ध के चरणों मे पहुंच गया और उसने रो-रो कर आदि से अन्त तक अपनी

सारी बुराइयों को प्रभु के सामने रखा और प्रार्थना की हे! भगवान अब मुझे बुराइयों से हटाकर अपने चरणों में लगा लो है! करूणा निधान। आप पतितपावन हैं। प्रभु अभागे को चरणों में शरण दो प्रभु। भगवान बुद्ध ने अपने ज्ञान द्वारा देखकर कि आज का यह डाकू कल बहुत बडा संन्यासी बनने वाला है। उन्होंने तथास्तु कहकर उस को अपना शिष्य बना लिया और उसके साथियों को सभ्य नागरिक बनने का आदेश देकर विदा कर दिया।

गीत

-संघ प्रवर्तिनी साध्वी मंजुलाश्री

हर चीज यहां नकली, धोखे में मत आना
अंगारों पर कजली, धोखे में मत आना।।

खाना नकली, पीना नकली, दवा मिलावट वाली
फल भी नकली, फूल भी नकली, रूपया भी है जाली।

बंगला नकली, कपड़ा नकली, जेबर भी है नकली
मोटरकार मशीनें नकली, कौन यहां पर असली।

नौकर नकली, मालिक नकली, पिता पुत्र भी नकली
नेता नकली, जनता नकली, नकली हड्डी पसली।

चेला नकली, गुरू भी नकली, सारे रिश्ते झूठे
धर्म भी नकली, ध्यान भी नकली, योगी बड़े अनूठे।

डॉक्टर नकली, मास्टर नकली, दवा पढ़ाई नकली
फिर भी होड़ लगी है देखो दुनिया कैसी पगली।

डिग्री नकली, सर्विस नकली, पासपोर्ट है नकली
भीतर है कुछ, बाहर है कुछ, किस पर करें तसल्ली।

तंत्र-विद्या

स्वस्तिक की महिमा

स्वस्तिक का भारतीय संस्कृति में बड़ा महत्व है। हर शुभ कार्य की शुरूआत स्वस्तिक बनाकर ही की जाती है। यह मंगल भावना एवं सुख सौभाग्य का प्रतीक है। ऋग्वेद में स्वस्तिक के देवता सवृन्त का उल्लेख है। सवृन्त सूत्र के अनुसार इस देवता को मनोवांछित फलदाता सम्पूर्ण जगत का कल्याण करने और देवताओं को अमरत्व प्रदान करने वाला कहा गया है।

सिद्धांतसार के अनुसार उसे ब्रह्मांड का प्रतीक माना जाता है। इसके मध्य भाग को विष्णु की नाभि, चारों रेखाओं को ब्रह्मा जी के चार मुख, चार हाथ और चार वेदों के रूप में निरुपित करने की भावना है। देवताओं के चारों ओर घूमने वाले आभामंडल का चिन्ह ही स्वस्तिक के आकार का होने के कारण इसे शास्त्रों में शुभ माना जाता है। यह आकार चारों दिशाओं का द्योतक माना गया है।

स्वस्तिक को भारत में ही नहीं, विश्व के अन्य कई देशों में विभिन्न स्वरूपों में मान्यता प्राप्त है। जर्मनी, यूनान, फ्रांस, रोम, मिश्र, ब्रिटेन, अमेरिका, स्कैण्डिनेविया, सिसली, स्पेन, सीरिया, तिब्बत, चीन, साइप्रस और जापान आदि देशों में भी स्वस्तिक का प्रचलन है।

तिब्बती इसे अपने शरीर पर गुदवाते हैं और चीन में इसे दीर्घायु एवं कल्याण का प्रतीक माना जाता है। सुख-समृद्धि एवं रक्षित जीवन के लिए ही स्वस्तिक पूजा का विधान है।

अधिकांश लोगों की मान्यता है कि स्वस्तिक सूर्य का प्रतीक है। जैन धर्मावलम्बी अक्षत पूजा के समय स्वस्तिक चिन्ह बनाकर तीन बिन्दु बनाते हैं। पारसी उसे चतुर्दिक दिशाओं एवं चारों समय की प्रार्थना का प्रतीक मानते हैं। व्यापारी वर्ग इसे शुभ-लाभ का प्रतीक मानते हैं। बहीखातों में ऊपर श्री लिखा जाता है। इसके नीचे स्वस्तिक बनाया जाता है।

ऐतिहासिक साक्ष्यों में स्वस्तिक का काफी महत्व बताया गया है। मोहनजोदड़ो, हड़प्पा संस्कृति, अशोक के शिलालेखों, रामायण, हरवंश पुराण, महाभारत आदि में इनका अनेक बार उल्लेख मिलता है।

-प्रस्तुति : नमन जैन

मुक्ति मार्ग

सिपाही को अपनी लाल पगड़ी पर, सुंदरी को अपने गहनों पर और वैद्य को अपने सामने बैठे हुए रोगियों पर जो घमंड होता है, वही किसान को अपने खेतों को लहलहाते हुए देखकर होता है। झींगुर जब अपने ऊख के खेतों को देखता तो उस पर नशा-सा छा जाता। तीन बीघे ऊख थी। इसके छह सौ रूपये तो खुशी-खुशी मिल जाएंगे। और जो कहीं भगवान ने कृपा कर दी तो बस कहना है क्या!

दोनों बैल बुड्ढे हो गए। अब नए मेले से ले जाएगा। कहीं दो बीघे खेत और मिल गए, तो लिखा लेगा। रूपये की क्या चिंता है, बनिए अभी से उसकी खुशामद करने लगे थे। ऐसा कोई न था, जिससे उसने गांव में लड़ाई न की हो। वह अपने आगे किसी को कुछ समझता ही नथा।

एक दिन संध्या के समय वह अपने बेटे को गोद में लिए मटर की फलियां तोड़ रहा था। इतने में उसे भेड़ों का एक झुंड अपनी तरफ आता दिखाई दिया। वह अपने मन में कहने लगा, 'इधर से भेड़ों के निकलने का रास्ता न था। क्या खेत की मेंड़ पर से भेड़ों का झुंड नहीं जा सकता था? भेड़ों का इधर से लाने की क्या जरूरत थी? ये खेतों को कुचलेंगी, चरेंगी। नुकसान कौन भरेगा? मालूम होता है बुद्धू गडरिया है। बच्चू को घमंड हो गया है, तभी तो खेतों के बीच से भेड़ें लिए चला आता है। जरा इसकी ढिठाई तो देखो, देख रहा है कि मैं खड़ा हूं, फिर भी भेड़ों को लौटाया नहीं। कौन मेरे साथ कभी रिआयत की है कि मैं इसकी परवाह करूं? अभी एक भेड़ मोल मांगू तो पांच ही रुपये मांगेगा। सारी दुनिया में चार रुपयें के कंबल बिकते हैं, पर यह पांच से नीचे बात नहीं करेगा।'

इतने में ही भेड़ें खेत के पास आ गईं। झींगुर ने ललकारकर कहा- 'अरे, ये भेड़ कहां लिए आते हो?'

बुद्धू नम्र भाव से बोला- 'महतो, मेंड़ पर से निकल जाएंगी। घूमकर जाऊंगा तो कोस भर का चक्कर पड़ेगा।'

झींगुर, 'तो तुम्हारा चक्कर बचाने के लिए मैं अपने खेत क्यों कुचलवाऊं? लौटाओ इन्हें।'

बुद्धू, 'महतो, आज निकल जाने दो। फिर कभी इधर से आऊं तो सजा देना।'

झींगुर, 'कह दिया कि लौटाओ इन्हें! अगर एक भी मेंड़ पर आई तो समझ लो तुम्हारी खैर नहीं।'

बुद्धू, 'महतो, अगर तुम्हारी एक बेल भी किसी भेड़ के पैरों तले आ जाए तो मुझे बैठाकर सौ गालियां देना।'

बुद्धू बातें तो बड़ी नम्रता से कर रहा था किंतु लौटाने में अपनी हेठी समझता था। उसने मन में सोचा, 'इसी तरह जरा-जरा-सी धमकियों पर भेड़ों को लौटाने लगा, तो फिर मैं चरा चुका भेड़ें। आज लौट जाऊं, तो कल को कहीं निकलने का रास्ता ही न मिलेगा। सभी रोब जमाने लगेंगे।'

बुद्धू भी कोई आम आदमी न था। बारह कोड़ी भेड़ें थीं। उन्हें खेतों में बिठाने के लिए मजदूरी मिलती थी, दूध बेचता था, ऊन के कंबल बनाता था। सोचने लगा, 'इतने गरम हो रहे हैं, मेरा कर ही क्या लेंगे? इनका दबैल तो हूं नहीं।'

भेड़ों ने जो हरी-हरी पत्तियां देखीं तो अधीर हो गईं। खेत में घुस पड़ीं। बुद्धू उन्हें डंडों से मार-मारकर खेत के किनारे से हटाया था, वे इधर-उधर से निकलकर खेत में जा पड़ती थीं। झींगुर ने आगे होकर कहा, 'तुम मुझसे हेकड़ी जताने चले हो, तुम्हारी सारी हेकड़ी निकाल दूंगा।'

बुद्धू, 'तुम्हें देखकर चौंकती हैं। तुम हट जाओ तो मैं सबको निकाल ले जाऊं।'

झींगुर ने लड़के को तो गोद से उतार दिया और अपना डंडा संभालकर भेड़ों पर पिल पड़ा। धोबी भी इतनी निर्दयता से अपने गधे को न पीटता होगा। किसी भेड़ की टांग टूटी, किसी की कमर टूटी। सबने बें-बें का शोर मचाना शुरू किया। बुद्धू चुपचाप खड़ा अपनी सेना का विध्वंस अपनी आंखों से देखता रहा। वह न भेड़ों को हांकता था, न झींगुर से कुछ कहता था, बस खड़ा तमाशा देखता रहा। दो मिनट में झींगुर ने इस सेना को अपने अमानुषिक पराक्रम से मार भगाया। मेष-दल का संहार करके वह विजय-गर्व से बोला, 'अब सीधे चले जाओ। फिर इधर से आने का नाम न लेना।'

बुद्धू ने घायल भेड़ों की ओर देखते हुए कहा- 'झींगुर, तुमने यह अच्छा नहीं किया, पछताओगे।'

केले को काटना भी उतना आसान नहीं, जितना किसान से बदला लेना। उसकी सारी कमाई खेतों में रहती है, या खलिहानों में। कितनी ही दैविक और भौतिक आपदाओं के बाद कहीं अनाज घर में आता है और जो कहीं आपदाओं के साथ विद्रोह ने भी संधि कर ली तो बेचारा किसान कहीं का नहीं रहता। झींगुर ने घर आकर दूसरों से इस संग्राम का वृत्तांत कहा।

लोग समझाने लगे, 'झींगुर, तुमने बड़ा अनर्थ किया। बुद्धू को जानते नहीं, कितना झगड़ालू आदमी है। अब भी कुछ नहीं बिगड़ा। जाकर उसे मना लो। तुम्हारे साथ सारे गांव पर आफत आ जाएगी।' झींगुर की समझ में बात आई। पछताने लगा कि मैंने क्यों उसे रोका। अगर भेंड़ें थोड़ा-बहुत चर जातीं तो कौन मैं उजड़ा जाता था। वास्तव में हम किसानों का कल्याण दबे रहने में ही है। ईश्वर को भी हमारा सिर उठाकर चलना अच्छा नहीं लगता।

झींगुर का जी बुद्धू के घर जाने को बिल्कुल नहीं करता था। दूसरों के आग्रह से मजबूर होकर चला गया।

अगहन का महीना था। कुहरा पड़ रहा था। चारों ओर अंधकार छाया हुआ था। गांव से बाहर निकला ही था कि सहसा अपने ऊख के खेत की ओर अग्नि ज्वाला देखकर चौंक पड़ा। छाती धड़कने लगी। खेत में आग लगी हुई थी। बेतहाशा दौड़ा। मनाता जाता था कि मेरे खेत न हों। ज्यों-ज्यों खेतों के समीप पहुंचता था वह आशामय भ्रम झूठ होता जाता था वह अनर्थ हो ही गया, जिसके निवारण के लिए वह घर से चला था। हत्यारे ने आग लगा ही दी और मेरे पीछे सारे गांव को चौपट किया। जब वह खेत के करीब पहुंचा तो आग प्रचंड रूप धारण कर चुकी थी। झींगुर ने हाय-हाय मचाना शुरू किया। गांव के लोग दौड़ पड़े और खेतोंसे अरहर के पौधे उखाड़कर आग को पीटने लगे।

अग्नि-मानव संग्राम का भीषण दृश्य उपस्थित हो गया। एक पहर तक हाहाकार मचा रहा। कभी एक प्रबल होता था तो कभी दूसरा। अग्नि पक्ष के योद्धा मर-मरकर जी उठते थे और द्विगुण शक्ति से, रणोनमत्त होकर शस्त्र प्रहार करने लगते थे। मानव पक्ष में जिस योद्धा की कीर्ति सबसे उज्ज्वल थी, वह बुद्धू था। बुद्धू कमर तक धोती चढ़ाए, प्राण हथेली पर लिए, अग्नि राशि में कूद पड़ता था और शत्रुओं को परास्त करके, बाल-बाल बचकर निकल आता था। अंत में मानव दल की विजय हुई, किंतु ऐसी विजय जिसपर हार भी हंसती। गांव भर की ऊख जलकर भस्म हो गई और ऊख के साथ अभिलाषाएं भी भस्म हो गई।

आग किसने लगाई, यह खुला हुआ भेद था, पर किसी को कहने का साहस न था। कोई सबूत नहीं था। प्रमाणहीन तर्क का मूल्य ही क्या? झींगुर को घर से निकलना मुश्किल हो गया। जिधर जाता, ताने सुनने पड़ते। तुम्हीं ने हमारा सर्वनाश किया। तुम्हीं घमंड के मारे धरती पर पैर न रखते थे। आप-के-आप गए, अपने साथ सारे गांव भर को डूबो दिया। बुद्धू को न छेड़ते तो आज यह दिन क्यों देखना पड़ता?

झींगुर को अपनी बरबादी का इतना दुख न था जितना इन जली-कटी बातों का। दिन भर घर में बैठा रहता। पूस का महीना आया। जहां सारी रात कोल्हू चला करते थे, गुड़ की सुगंध उड़ती रहती थी, भट्टियां जलती रही थीं और लोग भट्टियों के सामने हुक्का पीया करते थे, वहां सन्नाटा छाया हुआ था। ठंड के मारे लोग सांझ से ही किवाड़ बंद करके पड़े रहते और झींगुर को कोसते। गांव के सारे कुत्ते, जो रात को भट्टियों की राख में सोया करते थे, ठंड से मर गए। कितने ही जानवर चारे के अभाव से चल बसे। शीत का प्रकोप हुआ और सारा गांव खांसी-बुखार से ग्रस्त हो गया। और यह सारी विपत्ति झींगुर की करनी थी अभागे झींगुर की।

झींगुर ने सोचते-सोचते निश्चय किया कि बुद्धू की दशा भी अपनी ही सी बनाऊंगा। उसके कारण ही मेरा सर्वनाश हो गया है, वह चैन की बंशी बजा रहा है। मैं भी उसका सर्वनाश करूंगा।

जिस दिन इस घातक कलह का बीजारोपण हुआ, उसी दिन से बुद्धू ने उधर आना छोड़ दिया था। झींगुर ने उससे धीरे-धीरे मेल बढ़ाना शुरू किया। वह बुद्धू को दिखाना चाहता था कि तुम्हारे ऊपर मुझे बिल्कुल संदेह नहीं है। एक दिन कंबल लेने के बहाने गया, फिर दूध लेने के बहाने गया। बुद्धू उसका खूब आदर-सत्कार करता। चिलम तो आदमी दुश्मन को भी पिला देता है, वह उसे बिना दूध और शरबत पिलाए न आने देता।

झींगुर आजकल एक सन लपेटने वाले कारखाने में मजदूरी करने जाया करता था। बहुधा कई-कई दिनों की मजदूरी इकट्ठी मिलती थी। बुद्धू ही की तत्परता से झींगुर का रोजाना खर्च चलता था। झींगुर ने उससे खूब मेलजोल बढ़ा लिया।

एक दिन बुद्धू ने पूछा- 'क्यों झींगुर, अगर अपनी ऊख जलाने वाले को पा जाओ तो क्या करो? सच कहना।'

झींगुर ने गंभीर भाव से कहा- 'मैं उससे कहूंगा भैया तुमने जो कुछ किया, बहुत अच्छा किया। मेरा घमंड तोड़ दिया, मुझे आदमी बना दिया।'

बुद्धू, 'मैं जो तुम्हारी जगह होता, तो बिना उसका घर जलाए न मानता।'

झींगुर, 'चार दिन की जिंदगानी में वैर-विरोध बढ़ाने से क्या फायदा? मैं तो बरबाद हुआ ही, अब उसे बरबाद करके क्या पाऊंगा।'

बुद्धु, 'बस यही आदमी का धर्म है। पर भाई क्रोध के बस में होकर बुद्धि उलटी हो जाती है।'

-क्रमशः

कहानी

रिश्तों में दरार

अंकित! तुम्हें स्कूल जाना है न? देख तेरे दोस्त कब से इन्तजार कर रहे हैं। जल्दी से स्कूल की ड्रेस पहन कर तैयार हो जा।

नहीं मम्मी! आज मुझे स्कूल नहीं जाना है। भाभी के पेट में दर्द है। मैं डॉक्टर को बुलाकर लाऊंगा। जब भाभी ठीक हो जाएगी, तब भाभी के हाथ से नाश्ता करके स्कूल जाऊंगा।

पगले! भाभी के लिए डॉक्टर लाने के लिए घर में बहुत लोग हैं। तेरे पापा, तेर भैया, कोई भी डॉक्टर को बुला लायेंगे। भाभी ठीक हो जाएगी। जब तू स्कूल से वापस आएगा, भाभी तुझे रसोई में खाना पकाती मिलेगी। अभी मैं नाश्ता बनाती हूं, तू फटाफट कपड़े बदल ले। देख तेरे दोस्त कब से खड़े हैं।

मम्मी! मैंने आपसे कह दिया न? मैं इस हालत में भाभी को छोड़कर नहीं जाऊंगा। मुझे जरा-सा जुकाम हो जाता है तो भाभी अपने मायके जाने का इरादा छोड़ देती हैं। और मैं भाभी को पेट दर्द से चीखती छोड़कर स्कूल चला जाऊं।

अंकित! तुम्हारी भाभी की देखभाल करने वाले घर में बहुत हैं। तुम्हारे पापा और भैया भी ऑफिस नहीं जा रहे हैं। मैं और नीलम भी घर पर ही हैं। तुम अपना स्कूल मिस मत करो।

मम्मी! चाहे आप मुझे स्कूल भेज दो लेकिन यह बात पक्की है कि मैं वहां पढ़ नहीं पाऊंगा। मुझे क्लास में बैठे-बैठे भी भाभी की चीखें सुनाई देंगी। मैं वहां दिन भर छटपटाता रहूंगा। हो सकता है भाभी दो घण्टे में ठीक भी हो जाए परन्तु मैं वहां पांच घण्टे के पीरियड में छटपटाता रहूंगा। अब बोलिए, जो कहें वही कर लूं।

अंकित! अगर तुम इस तरह स्कूल मिस करोगे तो फिर स्कूल जा ही नहीं पाओगे। घर में कोई-न-कोई बीमार तो अक्सर रहता ही है। कभी तुम्हारे पापा को ब्लडप्रेशर हो जाता है और कभी भैया का सिर दर्द करने लगता है, कभी दीदी को बुखार हो जाता है और कभी मम्मी को शुगर बढ़ जाता है। छुट-पुट बीमारियां तो घर में चलती ही रहती हैं। तुम किस-किस की बीमारी पर स्कूल छोड़ोगे।

मम्मी! मैं किसी और की बीमारी पर स्कूल छोडूं या न छोडूं, लेकिन भीभी की बीमारी और उदासी मैं सहन नहीं कर सकता।

अरे अंकित! भाभी ने तेरे पर ऐसा क्या जादू कर दिया, जो तुमको हर समय भाभी-ही भाभी याद रहती है। घर में और भी लोग हैं। अपने सहोदर भाई और बहन से तुम्हें इतना लगाव नहीं, जितना कि भाभी के साथ है इसका क्या कारण है?

मम्मी! रिश्ते हमेशा प्यार के होते हैं। जो व्यक्ति स्नेह, प्यार और वत्सलता देता है, वह अगर बेगाना हो तो भी अपना हो जाता है। भाभी ने मेरे जैसे नटखट और नादान बच्चे को जो निश्छल स्नेह दिया है, मेरे लिए जो कुर्बानियां की हैं, मैं उनका कायल हूं।

अच्छा अंकित! जब भाभी के प्रति तुम्हारी इतनी हमदर्दी है तो तुम आज स्कूल मत जाओ और भाभी को देखभाल और सेवा करके अपना कर्तव्य पूरा करो। लेकिन देखो भाभी को छोड़कर इधर-उधर दोस्तों के साथ खेलने मत चले जाना। नहीं मम्मी! नहीं, मैं दिन भर भाभी की मक्खियां उड़ाता रहूंगा और साथ-साथ उनको अच्छी-अच्छी कहानियां भी पढ़कर सुनाता रहूंगा। मम्मी! मैं अपने जीवन में भाभी से दूर नहीं रह सकूंगा। मेरे लिए काम-धन्धा भी इसी शहर में खोजना। मैं अपनी भाभी की छत्र-छाया छोडकर कहीं दूर नहीं जा पाऊंगा।

अंकित! थोड़ा ठहर जाओ। शादी हो लेने दो। फिर कितना भाभी के पास रहोगे और कितना मम्मी को चाहोगे हम भी देख लेंगे।

मम्मी! आप क्या कह रही हैं? आपका अंकित दूसरे लड़कों जैसा नहीं, जो अपने खून के रिश्तों को ताक पर रख दे और एक अजनबी-परायी लड़की के इशारों पर नाचना शुरू कर दे।

बेटे अभी मैं कुछ नहीं कहती। समय बताएगा कि तू जोरू का गुलाम बनेगा या नहीं।

अंकित! अब तुम्हारी पढ़ाई पूरी हो चुकी है। इधर ढेर सारे रिश्ते भी आ रहे हैं। तुम कोई लड़की पसन्द कर लो तो हम अपनी जिम्मेवारी से मुक्त हो जाएं।

देखो मम्मी! आपके, मेरे और भाभी के बीच में दरार पैदा करने वाली शादी मुझे नहीं चाहिए। भले ही मैं जीवन भर कुंआरा रह जाऊं। और फिर मेरे लिए जो भी लड़की पसन्द करनी है, वह भाभी करेंगी। आप भाभी को दिखा दो। उन्होंने जिस लड़की के लिए हां कह दी, वही आपकी छोटी बहूरानी होगी।

अच्छा तो फिर तुझे, तेरी होने वाली पत्नी दिखाने की जरूरत नहीं है?

नहीं मम्मी! मुझे करना ही क्या है देखकर? और फिर जो भी लड़की मेरी पत्नी बनकर इस घर में में आएगी आखिर तो दिन भर वह घर में आपके और भाभी के साथ ही रहेगी। मैं तो शाम को नौ बजे घर जाऊंगा, रात-भर सो लूंगा और सुबह उठकर फिर बाहर चला जाऊंगा। मुझे कितनी देर उसके साथ रहना है।

बेटे! आजकल की लड़कियां बड़ी तेज-तर्रार होती हैं। शादी होते ही अपने पति को परिवार से तोड़ लेती हैं। इसलिए मैं कहती हूं कि आने वाली बहू मेरी और भाभी की

बनकर कितने दिन रहेगी। आखिर तो वह तुमको हमसे तोड़े ही लेगी। सो उसके साथ जिन्दगी बसर तुम्हें करनी है, हमें नहीं, इसलिए तुम अपनी पसन्द की लड़की चुन लो।

मम्मी! आपका बेटा और लड़कों जैसा नहीं कि एक परायी लड़की के कहने से अपने परिवार का परित्याग कर दे।

बेटा! यह तो आने वाला कल ही बताएगा। बड़ी-बड़ी डींहां होकने वाले भी औरतों के गुलाम हो ही जाते हैं।

आओ अंकित! आओ रूपाली! तुम्हारी जोड़ी चिरायु हो। तुम लोग घूम आये? थक गये होंगे, अब आराम करो।

हां मम्मी! हम घूम तो आये लेकिन मुझे लगता है कि अब हम लोग इस घर में ज्यादा दिन तक एक साथ नहीं रह पाएंगे।

अरे क्या बात कर रहे हो? इस घर में नहीं रहोगे तो कहां रहोगे? तुमने क्या सोचा है?

मम्मी! मुझे शिमले में एक नौकरी मिल गयी है और मैंने वहां पर ग्यारह सौ रूपये महीने किराए पर एक फ्लैट भी देख लिया है। अब तो हम लोग बहुत जल्दी वहां चले जाएंगे।

यह क्या बेटे! तुम्हें नौकरी तलाश करने और फ्लैट किराए पर लेने के लिए किसने कहा? तुम्हारे बाप-दादों का इतना बड़ा व्यापार, इतनी बड़ी कोठी, फिर ले-दे के तुम दो ही तो भाई हो। तुम्हारे पापा वैसे ही बीमार रहते हैं। तुम अगर शिमला चले जाओगे तो यहां का इतना बड़ा व्यापार कौन संभालेगा? तुम्हारे बिना हमारा मन कैसे लगेगा?

मम्मी! आप कुछ भी कहें। मैं रूपाली को उदास नहीं देख सकता। वह हमारे घर के माहौल में नहीं रह पाएगी। वह पढ़ी-लिखी आधुनिक विचारों वाली लड़की है।

बच्चू! आज से ही कल हो गया। रूपाली के उदास होने की नौबत ही क्यों आयी? अभी वह इस घर में रही ही कितनी है? जो इस घर का माहौल उसको रास नहीं आया।

मम्मी! रूपाली अब भाभी के साथ नहीं रह सकेगी।

अरे नालायक! भाभी को बदनाम कर रहा है। यह अच्छी बात नहीं है। क्या तू इतने वर्षों से भाभी को देख नहीं रहा है। कल तक तो भाभी तेरे लिए परमात्मा थी। आज शादी होते ही वह राक्षस बन गयी। अभी रूपाली का भाभी से वास्ता ही कौन-सा पड़ा है। तेरह तारीख की तुम्हारी शादी थी। चौदह की शाम को तुम घूमने चले गये और आज पच्चीस तारीख को लौटकर घर आये हो। भाभी को तो अभी तुम लोगों ने प्रमाण भी नहीं किया होगा।

मम्मी! अब भाभी को तो प्रणाम करना भी नहीं है। मैं और रूपाली भाभी की शक्ल भी नहीं देखना चाहते।

अरे! हुआ क्या है, जो भाभी के लिए तुम्हारे मन में इतनी घृणा भर गयी है। तुम तो भाभी के भगत थे। देवी की तरह अपनी भाभी की पूजा करते थे। रूपाली ने आते ही इस घर के टुकड़े-टुकड़े करना क्यों शुरू कर दिया।

मम्मी! रूपाली के विषय में कुछ कहने की कोई जरूरत नहीं है। यह अपने मां-बाप की इकलौती लड़की है, किसी की खरी-खोटी नहीं सुनेगी।

अच्छा तो अंकित! ऐसा करते हैं, तुम्हारे भैया-भाभी को दूसरा मकान ले देते हैं। तुम और रूपाली इसी कोठी में मां-बाप के साथ आराम से रहो और अपना फर्ज पूरा करो।

मम्मी! फिर वही बात! आपके साथ इस कोठी में रहेंगे तो यहां भाभी भी कभी-कभार आएगी। भैया का भी आना-जाना बना रहेगा। भाभी के बच्चे भी दिन भर परेशान करते रहेंगे। नीलम भी जब-जब ससुराल से आती रहेगी। हम अपने जीवन की शान्ति को भंग नहीं करना चाहते।

अंकित! याद रखना, तुम्हारे भी बच्चे होंगे। उन्होंने भी तुम्हारे साथ ऐसा ही किया तो? तुम सब कुछ भूल गये कि तुम कितने बीमार रहते थे। किस कदर तुम्हारे पापा और भैया तुम्हारे लिए पूरी-पूरी रात जागते थे। भाभी तो तुम्हारे लिए अपने बच्चों को भी भूल जाया करती थी। कुछ तो लिहाज करो। क्या कहंगे सभी रिश्तेदार। तुम दो-चार महीने ठहर कर रूपाली को ले जाना। अभी इतनी जल्दी मत करो बेटे।

रूपाली! अपना सामान उठाओ और बिस्तर गोल करो, इन लोगों की बकवास सुनते रहे तो जीवन भर इस नारकीय जीवन से छुटकारा नहीं मिलेगा। मम्मी के दिल में भाभी ही बसी हुई है वे हमारे बारे में क्या सोचे समझेंगे।

सारा परिवार देखता रह गया। कभी न बदलने की सौगन्ध खाने वाला अंकित अपनी पत्नी रूपाली के साथ घर छोड़कर चला गया।

-प्रस्तुति : किरण तिवारी

किसी की दूरी का लाभ उठाने की कोशिश मत करो,
इस कथा अधूरी का लाभ उठाने की कोशिश मत करो,
ज़िन्दगी के सब दिन समान नहीं होते, इसलिए दोस्त!
किसी मजबूरी का लाभ उठाने की कोशिश मत करो।

-आचार्यश्री रूपचन्द

भगवान् मल्लीनाथ

○ उपाध्याय श्री अमर मुनि

जैन धर्म के उन्नीसवें तीर्थंकर मल्लीनाथ का जीवन विभिन्न घटनाओं से परिपूर्ण है। श्वेताम्बर परंपरा का यह कथानक बहुत मार्मिक है कि तप-त्याग-साधना में भी कपटपूर्ण प्रतिस्पर्धा के कारण व्यक्तित्व में किस प्रकार से मीन-मेख लग जाती है।

अपरविदेह की सलिलावती विजय में वीतशाका नामक नगरी थी। यहां के राजा महाबल अत्यन्त पराक्रमी ओर प्रभावशाली थे। उनके छह अन्य बालसखा मित्र थे। सभी में घनिष्ट मित्रता थी।

एक बार श्रमणों के सत्संग से महाबल राजा को वैराग्य हुआ। उन्होंने अपने छहों मित्रों से कहा- 'मैं तो संसार त्यागकर दीक्षा लेना चाहता हूं, तुम्हारी क्या इच्छा है?'

छहों मित्र बोले- 'हम सुख-दुःख में हमेश साथ रहे हैं। सुख-दुःख में हमेशा साथ रहे हैं। सुख-भोग में हमेशा साथ रहने वाला त्याग-मार्ग में पीछे रहे, यह तो मित्रता के लिए लज्जा की बात है। हम साथ ही मुनि-दीक्षा लेंगे और साथ-साथ तप आदि करेंगे।'

छह मित्र एवं सातवें महाबल राजा, सभी ने दीक्षा ले ली। तप आदि करने लगे। महाबल मुनि के मन में अपने विगत जीवन का गर्व जाग उठा- 'मैं हर बात में अपने मित्रों से ऊंचा और चढ़-चढ़कर रहा हूं, अब यदि तप-साधना में समान रहा तो आगे भी समान ही रहूंगा।' अपनी अलग विशेषता रखने की भावना से महाबल मुनि ने गुप्त रूप से तप करना प्रारंभ किया। सातों मित्र तप का प्रत्याख्यान करते, किन्तु जब छहों मित्र पारणा के लिए आहार ले आते तो महाबल मुनि कुछ न कुछ बहाना बनाकर अपना तप आगे बढ़ा देते, पारणा नहीं करते। इस प्रकार तपश्चर्या में भी कपटपूर्ण प्रतिस्पर्धा चलने लगी और उसका कारण था- दूसरों से स्वयं को विशिष्ट रखने की गर्व भावना।

मित्रों के साथ कपट (माया) करने के कारण उत्कृष्ट तपोबली महाबल मुनि अपनी विशुद्ध भाव श्रेणी से नीचे गिर गये। मायाचार के कारण 'स्त्रीवेद' का बंध कर लिया। किन्तु फिर भी उनके मन में तप-त्याग-ध्यान आदि की उच्चतम भावना रही, इस उत्कृष्ट भाव-विशुद्धि के कारण आगे जाकर तीर्थंकर-नाम-कर्म का भी बंध कर लिया। वहां पर सातों ही मुनियों ने दो मास का संथारा करके देह त्यागी और अनुत्तर विमान में अहमिन्द्र बने।

अनुत्तर विमान से 32 सागरोपम का देव आयुष्य पूर्ण कर छहों मित्र अलग-अलग देशों के राजकुमार बने।

मल्लवी कुमारी का जन्म

मिथिला के कुंभ राजा की महारानी प्रभावती के गर्भ में महाबल राजा के जीव ने जन्म लिया। गर्भ के तीन महीने बाद रानी प्रभावती के मन में एक दोहद उत्पन्न हुआ। 'पांचों रंग के सुगंधित पुष्पों की सजी हुई शय्या हो और मैं उत्तम सुगंधित मल्लदास (गुच्छा-गुलदस्ता) सूघती रहूं।' पुण्यशाली आत्मा के पुण्य से सभी मनइच्छित पूर्ण होते हैं। रानी का दोहद भी पूर्ण हुआ। मार्गशीर्ष शुक्ला एकादशी को अर्ध रात्रि के समय रानी के गर्भ से एक महान पुण्यशाली अत्यंत रूपवती कन्या ने जन्म लिया। तीर्थंकर का स्त्री शरीर में जन्म लेना सभी के लिए आश्चर्यकारक था, परन्तु कर्मबन्ध को तो स्वयं भगवान भी नहीं टाल सकते।

मल्लीकुमारी नामकरण

मल्लदास (गुलदस्ता) के दोहद के कारण राजकन्या का 'मल्लीकुमारी' नाम रख गया। मल्लीकुमारी को स्नान के बाद अत्यंत सुगंधित और सुन्दर मल्लदास (गुलदस्तों) का शौक था। राजकुमारी का शौक पूरा करने के लिए देश-देश के मालाकार अद्‌भुत-अद्‌भुत गुलदस्ते बनाकर लाते, राजकुमारी को भेंट कर मनमाना पुरस्कार पाते। मल्लीकुमारी के मल्लदास के गुलदस्तों की विचित्र कहानियां देश-विदेश में प्रसिद्ध हो गई।

एक बार चम्पा नगरी का प्रसिद्ध धनाढ्य व्यापारी अर्हन्नक अनेक लोगों के साथ समुद्र यात्रा पर गया। विदेशों से खूब धन वैभव कमाकर लौटते समय समुद्र के बीच जिन धर्म द्वेष देव ने श्रावक अर्हन्नक की धर्मदृढ़ता की परीक्षा लेने के लिए अत्यंत भयंकर उपसर्ग किये। भय, यातना, प्रलोभन प्राणघाती कष्ट देकर अर्हन्नक को जिनर्म त्यागने के लिए मजबूर किया, परन्तु अर्हन्नक को मृत्यु स्वीकार थी, धर्म छोड़ना नहीं। उसकी धर्मदृढ़ता पर प्रसन्न होकर देवता ने उसे दिव्य कुण्डलों की जोड़ी भेंट स्वरूप प्रदान की।

श्रावक अर्हन्नक का जहाज लौटते समय मिथिला के बंदरगाह पर रुका। व्यापारियों ने कुंभ राजा के राज-दरबार में विविध प्रकार के उपहार भेंट किये। अर्हन्नक ने राजकुमारी मल्ली के लिए वे देवनामी दिव्य कुण्डल भेंट किये, जिन्हें देखकर राजा एवं समस्त दर्शकगण चकित रह गये।

एक बार उन दिव्य कुण्डलों की एक संधि (जोड़) टूट गई। राजा कुंभ ने कुशल स्वर्णकारी को संधि जोड़ने के लिए दी, परन्तु कोई भी कुशल कलाकार वह कुण्डल जोड़ नहीं सका। इस बात के राजा राज्य के प्रमुख स्वर्णकारों पर रूष्ट हो गये और उन्हें धिक्कारा- 'तुम कैसे कारीगर हो? एक कुण्डल भी नहीं जोड़ सके? ऐसे व्यर्थ के कलाकारों से मुझे कोई काम नहीं। चले जाओ, मेरे राज्य से बाहर।'

राजा द्वारा निष्कासित कलाकार अन्य देशों में चले गये। वे जहां भी जाते, मल्लीकुमारी के अद्वितीय रूप सौन्दर्य की चर्चा अवश्य करते।

मल्लीकुमारी का अद्वितीय सौन्दर्य

एक बार मल्लीमुमारी के छोटे भाई मल्लिदिन्न ने अपने राजमहल में एक अद्‌भुत रंगशाला (चित्रशाला) बनवाई। उन चित्रकारों में एक अद्‌भुत कुशल चित्रकार भी था। उसने राजमहलों के गवाक्ष की जाली में से एक बार राजकुमारी मल्ली के पांव का अंगूठा देख लिए था। उसने राजकुमारी का हूबहू आदमकद चित्र दीवार पर बना दिया। सोचा, अपनी बहन का हूबहू चित्र देखकर राजकुमार प्रसन्न होंगे, और मुझे मुंह-मांगा पुरस्कार देंगे।

चित्रशाला के पूर्ण होने पर राजकुमार अपनी रानियों के साथ रंगशाला के शृंगार रसों से परिपूर्ण चित्रों का अवलोकन कर रहा था। अचानक मल्लीकुमारी के चित्र पर कुमार की दृष्टि पडी, उसे भ्रम हो गया। लज्जा का अनुभव करते हुए बोला- 'अरे! मेरी माता समान पूजनीय बहन यहां उपस्थित है और मैं इस प्रकार के चित्रों को देख रहा हूं? उसकी धायमाता ने बताया- 'कुमार! आपको भ्रम हो गया है, यह पूजनीया ज्येष्ठ भगिनी नहीं, उनका चित्र है।' कुमार ने चित्र को दुबारा देखा, तो वह एक साथ आश्चर्य और क्रोध के भावों से विचलित-सा हो गया। आश्चर्य था- ऐसी कुशल कला पर, जो चित्र जीवन्त-सा प्रतीत हो रहा था, किन्तु क्रोध था, उस चित्रकार की दुर्बुद्धि पर कि उसने रंगशाला में मेरी पूजनीया बहन का एकदम जीवन्त-सा चित्र कैसे बना दिया? क्या उसने कभी मेरी बहन को इतनी गहराई से देखा है कि उसके नख-शिख का साक्षात् रूप चित्रित कर दिया?

क्रोधित राजकुमार ने चित्रकार को बुलाया, पूछने पर उसने निवेदन किया- 'मैंने तो गवाक्ष की जाली से सिर्फ राजकुमारी के पांव का अंगूठा ही देखा है, परन्तु मुझे चित्रकला-लब्धि प्राप्त होने से तूलिका स्वयं चलती है और साक्षात् स्वरूप अंकित कर देती है।'

चित्रकार के कथन पर भी राजकुमार का क्रोध शांत नहीं हुआ। उसने चित्रकार का अंगूठा कटवाकर उसे देश निकाला दे दिया।

खिसियाये हुएचित्रकार ने राजकुमारी का दूसरा चित्र बनाकर हस्तिनापुर के राजा अदीनशत्रु को भेंट किया। भरपूर पुरस्कार प्राप्त हुआ। अब हस्तिनापुर आदि क्षेत्रों में भी मल्लीकुमारी के अद्वितीय रूप सौन्दर्य की चर्चा होने लगी। अदीनशत्रु मल्लीकुमारी के रूप सौन्दर्य पर आकृष्ट हो गया।

परिव्राजिका चोखा के धर्मचर्चा

एक बार चोखा नाम की एक विदुषी परिव्राजिका पर्यटन करती हुई मिथिला में आई। वह वेद और शास्त्रों में पारंगत थी। अपना प्रभाव जमाने के लिए वह राजकुमारी मल्ली से धर्मचर्चा करने के लिए राजमहलों में आई।

राजकुमारी ने पूछा- 'तुम्हारे धर्म का मूल क्या है?'

परिव्राजिका- 'शुचिता (स्नान आदि कर्म) से पवित्र रहकर धर्म साधना करना ही हमारा धर्म है।'

-क्रमशः

कहानी

बेताल पच्चीसी-5

हिन्दी कथा-साहित्य में बेताल पच्चीसी की अपनी अलग पहचान है। इन कथाओं में नीति, संस्कृति और जीवनोपयोगी शिक्षाएं हैं। उसी की एक-एक कथा पढिये हर अंक में। *-गतांक से आगे*

उज्जैन में महाबल नाम का एक राजा रहता था। उसके हरिदास नाम का एक दूत था जिसके महादेवी नाम की बड़ी सुन्दर कन्या थी। जब वह विवाह योग्य हुई तो हरिदास को बहुत चिन्ता होने लगी। इसी बीच राजा ने उसे एक दूसरे राजा के पास भेजा। कई दिन चलकर हरिदास वहां पहुंचा। राजा ने उसे बड़ी अच्छी तरह से रखा। एक दिन एक ब्राह्मण हरिदास के पास आया।

बोला- तुम अपनी लड़की मुझे दे दो।

हरिदास ने कहा- मैं अपनी लड़की उसे दूंगा, जिसमें सब गुण होंगे।

ब्राह्मण ने कहा- मेरे पास एक ऐसा रथ है, जिस पर बैठकर जहां चाहो, घड़ी-भर में पहुंच जाओगे।

हरिदास बोला- ठीक है। सबेरे उसे ले आना।

अगले दिन दोनों रथ पर बैठकर उज्जैन आ पहुंचे। दैवयोग से पहले हरिदास का लड़का अपनी बहन को किसी दूसरे को और हरिदास की स्त्री अपनी लड़की को किसी तीसरे को देने का वादा कर चुकी थी। इस तरह तीन वर इकट्ठे हो गये। हरिदास सोचने लगा कि कन्या एक है, वह तीन हैं। क्या करे! इसी बीच एक राक्षस आया और कन्या को उठाकर विंध्याचल पहाड़ पर ले गया। तीनों वरों में एक ज्ञानी था। हरिदास ने उससे पूछा तो उसने बता दिया कि एक राक्षक लड़की को उड़ा ले गया है और वह विंध्याचल पहाड़ पर है।

दूसरे ने कहा- मेरे रथ पर बैठकर चलो। जरा सी देरी में वहां पहुंच जायेंगे।

तीसरे ने कहा- मैं शब्दवेधी तीर चलाना चानता हूं। राक्षक को मार गिराऊंगा।

वे सब रथ पर चढ़कर विंध्याचल पहुंचे और राक्षस का मारकर लड़की को बचा लिया

इतना कहकर वेताल बोला- हे राजन्! बताओ, वह लड़की उन तीनों में से किसको मिलनी चाहिए?

राजा ने कहा- जिसने राक्षस को मारा, उसको मिलनी चाहिए, क्योंकि असली वीरता तो उसी ने दिखाई। बाकी दो ने तो मदद की। राजा का इतना कहना था कि वेताल फिर पेड़ पर जा लटका और राजा फिर उसे लेकर आया तो रास्ते में वेताल ने छठी कहानी सुनायी।

-क्रमशः

एसिडिटी से बचाता है संतुलित भोजन

एसिडिटी रोग नही है। यह जीवनशैली का डिसआर्डर है, जिसका समाधान संभव है। ऐसा विशेषज्ञों का कहना है। आप अगर अपने आहार में जरा-सा परिवर्तन कर दें, तो गैस से बचा जा सकता है। साथ ही यह भी जरूरी है कि आप ताजा व स्वस्थ्य फूड खायें और कुछ ही समय में सब कुछ ठीक हो जायेगा। इसके अलावा कुछ और बातें भी हैं जिनको ध्यान में रखा जाये और उन पर अमल भी किया जाये तो पेट गैस से बचा जा सकता है। वो कौन-कौन सी बातें हैं यहां दी जा रही है। जंक फूड से बचें-डिब्बा बंद और जंक फूड से बचें।

साफ्ट ड्रिंक्स : क्या आप हर खाने के बाद पाचन के लिए साफ्ट ड्रिंक्स पीते हैं? अगर ऐसा करते हैं तो तुरंत इस पर विराम लगा दें। साफ्ट ड्रिंक एनजाइम को डायल्यूट कर देती हैं और पाचन सिस्टम पर दबाव डालती है। नतीजतन पेट में फर्मेन्टेशन होता है जिससे जबर्दस्त एसिडिटी बनती है।

अधिकता बुरी है : ज्यादा सिगरेट व शराब न पीयें। साथ ही अधिक चाय व कॉफी से भी बचें। बेहतर यह है कि नारियल पानी, तरबूज या कुकम्बर का जूस और नींबू पानी पीयें। यह प्राकृतिक कूलर्स है जो हमेशा शानदार काम करते हैं।

आधा आंवला : आंवला खट्टा होता है, लेकिन एसिडिटी के घरेलू उपचार के रूप में यह बहुत शानदार है। फौरन राहत के लिए 2 चम्मच आंवला जूस या सूखा हुआ आंवला पाउडर और दो चम्मच पीसी हुई मिसरी लें और दोनों को पानी में मिलाकर पी जायें।

दही : अपने रोजमर्रा के आहार में मट्ठा और दही शामिल कर लें। ताजे खीरे का रायता एसिडिटी का बेहतरीन उपचार है।

पानी : खूब पानी पीयें क्योंकि इससे न सिर्फ पाचन में मदद मिलती है बल्कि शरीर से टाक्सिन भी लशआउट हो जाते हैं। साथ ही जब भूखलगे तभी खायें। क्यों? पेट में डायजेस्टिव जूस उसी समय जारी होते है, जब व्यक्ति को भूख लगती है।

पाइन एपिल : पाइन एपिल का जूस एन्जाइम्स से भरा होता है। खाने के बाद अगर पेट अधित भरा व भारी महसूस हो रहा है, तो आधा गिलास ताजे पाइन एपिल का जूस पीयें। सारी बेचैनी ओर एसिडिटी दूर हो जायेगी।

गाजर : गाजर चबाने से थूक बढ़ जाता है और पाचन की क्रिया तेज हो जाती है। किस तरह से? यह डायजेस्टिव सिस्टम को आवश्यक एन्जाइमस और मिनरल्स प्रदान करता है जो फूड को तोड़ने के लिए जरूरी होते हैं।

-प्रस्तुति : योगी अरूण तिवारी

मासिक राशि भविष्यफल-फरवरी, 2014

○ डॉ. एन.पी मित्तल, पलवल

मेष- मेष राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह अवरोधों के चलते आय देने वाला है। किन्तु व्यय भी विशेष रूप से होगा। जिससे मानसिक चिन्ता बनी रहेगी। माह के उत्तरार्ध में व्ययाधिक्य होने की संभावना है। छोटी बड़ी यात्राएं होंगी जिनसे अधिक लाभ की आशा नहीं की जा सकती। शत्रु सिर उठाएंगे किन्तु नुकसान नहीं पहुंचा पाएंगे। अपने स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें। समाज में मान सम्मान बना रहेगा।

वृष- वृष राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह संघर्ष पूर्ण हालातों के चलते लाभ देने वाला है। माह का उत्तरार्ध, पूर्वार्ध की अपेक्षा अधिक सुदृढ़ स्थिति लिये हुए है। इस समय भी परिश्रम की अत्यधिक आवश्यकता रहेगी। अपने गुस्से पर काबू रखें अन्यथा कोई अनहोनी घटनाघट सकती है। यात्राओं में सावधानी बरतें।

मिथुन- मिथुन राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह मिश्रित फल देने वाला है। हां कार्य संबंधी नई योजनाएं बन सकती हैं। अपने स्वभाव में उग्रता न आने दें अन्यथा परिवार में सामन्जस्य बनाना मुश्किल हो जाएगा। कुछ बड़े लोगों से मुलाकात आप के काम आयेगी। आप अपने भूमि भवन का विक्रय किसी दबाव में आकर न करें। अपने स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें। समाज में मान सम्मान बना रहेगा।

कर्क- कर्क राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह पूर्वार्ध में उत्तरार्ध की अपेक्षा कम अच्छा है। अपने बिना सोचे विचारे किए गये कार्यों के कारण अपमान सहना पड़ सकता है। परिवार में सामन्जस्य बिठाना एक टेढ़ी खीर होगी। अपनी वाणी पर काबू रखना होगा। अपने स्वास्थ्य के प्रति विशेष रूप से सचेत रहें।

सिंह- सिंह राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह संघर्ष तथा अवरोधों के चलते निर्वाह योग्य धन दिलाने वाला है। अच्छा होगा कि आवश्यक निर्णयों में अपने जीवन साथी से विचार किया जाए। ऋण के लेन-देन में सतर्कता बरतें। नौकरी पेशा जातकों के लिये इस माह का उत्तरार्ध अच्छा है।

कन्या- कन्या राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह आय कम और व्यय अधिक कराने वाला है। यदि किसी का कार्य साझेदारी का है, उसमें कुछ अधिक लाभ की उम्मीद की जा सकती है। अपनी माता के स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें। जो कन्या राशि के जातक अभी तक अविवाहित हैं, उनके विवाह का प्रस्ताव आ सकता है।

तुला- तुला राशि के जातकों के लिये यह माह व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से अवरोधों के चलते धन लाभ के मार्ग प्रशस्त करेगा किन्तु संघर्ष अधिक करना पड़ेगा। कुछ जातकों को आकस्मिक धन की प्राप्ति हो सकती है। कुछ जातकों के घर में कोई मांगलिक कार्य संभावित है। अपने माता-पिता के स्वास्थ्य का विशेष तौर पर ध्यान रखें। परिवारजनों में सामन्जस्य बनाए रखना होगा।

वृश्चिक- वृश्चिक राशि के जातकों के लिये यह माह व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से कुल मिलाकर शुभ फल दायक है। शत्रु सिर उठाएंगे, परंतु आपसे पराजित ही होंगे। वे अपने मनसूबे पूरे करने में नाकामयाब होंगे। कुछ जातक कोर्ट-कचहरी में लटके हुए केसों को सुलझाने में सफलता प्राप्त करेंगे। जीवन साथी से संबंधों में मधुरता बनी रहेगी पर उसके स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें। समाज में मान-सम्मान बना रहेगा।

धनु- धनु राशि के जातकों के लिये यह माह व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से पूर्वार्ध की अपेक्षा उत्तरार्ध अच्छा रहेगा। पूर्वार्ध में रूके हुए कार्य पूरा होने की आशा बंधेगी तो उत्तरार्ध में वे कार्य पूरे होंगे। भूमि-भवन के क्रय विक्रय में लाभ की आशा की जा सकती है। छोटी बड़ी यात्राएं होंगी जिनसे वांछित फल मिलेगा। जीवनसाथी के स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें। यदि कोई आपसी समस्या हो तो थोड़ा नरमी बरतते हुए समय निकालें।

मकर- मकर राशि के जातकों के लिये इस माह व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से धन लाभ के अवसर प्राप्त होते रहेंगे। पूर्वार्ध की अपेक्षा उत्तरार्ध अधिक शुभ फल दायक है। भूमि भवन के क्रय विक्रय का प्रसंग आ सकता है जिससे लाभ की आशा है। सवारी के क्रय विक्रय का भी योग है। इन सभी प्रसंगों में तथा परिवार में सामन्जस्य बिठाने में वाणी पर नियन्त्रण अपेक्षित रहेगा। अपने स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें।

कुंभ- कुंभ राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह अधिक दौड़ धूप करके घनागम कराने वाला है। साझेदारी में कार्य करने वालों के लिये यह माह अपेक्षाकृत शुभ फल दायक है। कुछ जातक सवारी आदि से लाभ अर्जित करेंगे। दाम्पत्य जीवन में सामन्जस्य बना रहेगा। समाज में मान इज्जत बनी रहेगी।

मीन- मीन राशि के जातकों के लिये यह माह व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से निर्वाह योग्य धन की प्राप्ति कराने वाला है। पूर्वार्ध की अपेक्षा उत्तरार्ध अपेक्षाकृत शुभफल दायक है। कुछ जातक किसी घरेलू ठाठबार के लिए वस्तुओं की खरीदारी करेंगे। किसी न किसी रूप में इस माह इन जातकों का व्ययाधिक्य भी होगा। इन जातकों को वात व्याधि आदि कष्टों का सामना करना पड़ सकता है, सचेत रहें।

-इति शुभम्

नए वर्ष में कुछ नया सोचें, नया करें

सन् 2014 के नव वर्ष के अवसर पर पूज्यवर का उद्‌बोधन

पूज्य आचार्यश्री रूपचन्द्रजी ने सन् 2014 के नव वर्ष आगमन पर अपने मंगल संदेश में कहा- नए वर्ष-प्रवेश का अर्थ केवल केलेंडर बदलना ही नहीं है, अपने आपको बदलना भी है। आवश्यक यह है गत वर्ष में हमने जिस तरह का जीवन जिया है, उस पर मनो-मंथन होना चाहिए। अपने आचरण की समालोचना होनी चाहिए। भगवान महावीर फरमाते हैं-

से जाण मजाणं वा, कट्टु अहम्मियं पथं
संवरे खिप्प मप्पाणं बीयं तं न समायरे।

-जान या अनजान में कोई भी अधर्म-आचरण हुआ हो, उसका संवरण करें। दूसरी बार वैसा न हो, इसका संकल्प करें। मानसिक शांति और परिवार की शांति धर्माचरण की कसौटी हाती है। जो इस पर खरा उतरता है, उसे ही प्रभु का प्रसाद मिलता है। वह प्रसाद अपने अन्तः परिवर्तन से ही संभव है।

आपने कहा- हम औरों में परिवर्तन चाहते हैं। अपने में परिवर्तन की तरफ हमारा ध्यान नहीं जाता है। जबकि जीवन का मनो-विज्ञान यह है-

औरों को बदलने के लिए खुद को बदलना सीखें
शंकर बनना हो अगर विष-घूंट निगलना सीखें
उजाले की परिभाषा न मिलेगी किताबों में तुम्हें
उसे पाने के लिए खुद दीपक बन जलना सीखें

यह जीवन दीप बने -अप्प दीवो भव- अपने घर में उजाला हो ही, पड़ोस तक भी वह उजाला जाए। अपनी जीवन-बगिया फूलों की खुशबू महके ही, पूरा गांव खुशबूमय हो जाए। इसके लिए अपनी सोच को परार्थ और परमार्थ से जोड़ें। अपनी संवेदना को किसी दायरे से नहीं, पूरी सृष्टि से जोड़ें, अपने परिवार का दायरा -वसुधैव कुटुम्बकम्- तक विस्तार ले ले। औरों की खुशियों से हम खुश हों। अपनी खुशियों में औरों को शामिल करें। यदि ऐसा होता है तो आपकी खुशियां हजार गुना बढ जायेंगी। यही सच्चा धर्म है। यही सच्ची भक्ति है। यही सच्ची प्रभु-आराधना है।

जैन आश्रम, मानव मंदिर केन्द्र, नई दिल्ली में पूज्य गुरूदेव तथा पूज्या साध्वीश्री के मार्ग-दर्शन में शिक्षा-सेवा की सभी प्रवृत्तियां सुचारू रूप से चल रही हैं। सर्दी की छुट्टियों में इस बार साध्वी समताश्रीजी ने बच्चों में उन्नत संस्कारों की दृष्टि से महापुरूषों के जीवन की प्रेरणादायी घटनाएं विशेष रूप बताई। आगम-वाणी तथा गीता के श्लोक भी बच्चों ने कंठस्थ किये।